EDU TERIA
E - D.N.A
Daily Newspaper Analysis
Prelims Mains Essay
By- Nikhil Ranjan
Useful For Prelims
Date: 15 January 2026

रौलेट एक्ट के विरोध के समय सबसे आगे रहे थे डा. सैफुद्दीन किचलू

स्वतंत्रता सेनानी डा. सैफुद्दीन किचलू का जन्म 1888 में आज ही अमृतसर में हुआ था। जब अंग्रेजों ने 1919 का रौलेट एक्ट पारित किया, तो किचलू विरोध प्रदर्शनों का चेहरा बन गए। किचलू ने अपने साथी डा. सत्य पाल के साथ मिलकर हड़ताल का आह्वान किया और लोगों से कारोबार बंद करने तथा औपनिवेशिक शासकों के खिलाफ अहिंसक सत्याग्रह में भाग लेने का आग्रह किया। इस अधिनियम के खिलाफ उनके विरोध के आह्वान ने पंजाब के लोगों में जबरदस्त उत्साह पैदा किया। 10 अप्रैल को उन्हें गिरफ्तार कर लिया गया था। जलियांवाला बाग में 13 अप्रैल, 1919 को हुए जनसभा का एक उद्देश्य इस गिरफ्तारी का विरोध भी था।

डॉ. सैफुद्दीन किचलू → पंजाब के प्रमुख राष्ट्रवादी नेता

- **जन्म** → 1888, अमृतसर
- **रोलैट एक्ट, 1919** → बिना मुकदमे गिरफ्तारी का कानून
- **किचलू की भूमिका** → रोलैट विरोध के अग्रणी नेता
- **साथी नेता** → डॉ. सत्यपाल
- **आंदोलन का तरीका** → हड़ताल, अहिंसक सत्याग्रह
- **गिरफ्तारी** → 10 अप्रैल 1919
- **प्रभाव क्षेत्र** → अमृतसर, पंजाब
- **जलियांवाला बाग घटना** → 13 अप्रैल 1919
- **सभा का उद्देश्य** → किचलू–सत्यपाल की गिरफ्तारी का विरोध
- **ब्रिटिश अधिकारी** → जनरल डायर (फायरिंग आदेश)
- **ऐतिहासिक महत्व** → जन आंदोलन का क्रूर दमन
- **रोलैट सत्याग्रह** → गांधीजी द्वारा शुरू
- **1919** → "साल ऑफ क्राइसिस" (भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन)

Sci & Tech

Hindustan Page
Dainik Bhaskar
Jansatta Page

इस वर्ष पड़ेंगे चार ग्रहण, एक होगा देश में दृश्यमान

शैलेश अस्थाना • जागरण

- देश में नहीं दिखने वाले तीन ग्रहण का सूतक काल नहीं होगा मान्य
- आकाशमंडल में प्रतिवर्ष दो से लेकर छह बार तक होती हैं ग्रहण की घटनाएं

वाराणसी : महत्वपूर्ण खगोलीय घटनाओं के क्रम में आकाशमंडल में हमारे सौर परिवार में प्रतिवर्ष दो से लेकर छह बार तक ग्रहण की घटनाएं होती हैं। इनमें कभी सूर्य तो कभी चंद्रग्रहण होते हैं। इनमें से कुछ भारत में दृश्य होते हैं तो कुछ विश्व के अन्य हिस्सों में। इस बार वर्ष 2026 में ग्रहण की कुल चार घटनाएं होनी हैं, जिनमें दो सूर्य ग्रहण तथा दो चंद्रग्रहण होंगे, किंतु इस बार केवल एक चंद्र ग्रहण ही भारत में दृश्यमान होगा।

इस बार वर्ष का प्रथम सूर्यग्रहण फाल्गुन अमावस्या तिथि यानी 17 फरवरी को होगा। यह दक्षिण अर्जेंटीना, चिली, दक्षिण अफ्रीका और अंटार्कटिका में दिखाई देगा। ग्रहण के समय भारतीय भूभाग के समक्ष चंद्रमा के पिंड का अवरोध उत्पन्न नहीं होने के कारण सूर्य बिंब यहां से पूर्ण रूप से दिखाई देगा, इसलिए यहां ग्रहण की स्थिति नहीं बनेगी। इसके बाद साल का दूसरा सूर्य ग्रहण 12 अगस्त को लगेगा, जो पूर्ण

चंद्रग्रहण। फाइल

सूर्य ग्रहण रहेगा, लेकिन यह भी देश में नजर नहीं आएगा। यह पश्चिमी यूरोप के देशों, पश्चिमी अफ्रीका के देशों, उत्तरी अमेरिका के देशों, ग्रीनलैंड, उत्तरी अटलांटिक व प्रशांत महासागर के क्षेत्र में देखा जा सकेगा। इसलिए धार्मिक या आध्यात्मिक दृष्टि से भारत में इसका कोई प्रभाव नहीं माना जाएगा, न ही इन दोनों सूर्य ग्रहणों के अवसर पर देश में सूतक काल मान्य होगा।

काशी हिंदू विश्वविद्यालय ज्योतिष विभाग के पूर्व अध्यक्ष प्रो. विनय कुमार पांडेय बताते हैं कि ज्योतिष की दृष्टि से देश में केवल दृश्यमान ग्रहणों का ही सूतक प्रभावी होता है। इस बार तीन मार्च पूर्णिमा को लगने वाला ग्रस्तोदित खंड चंद्रग्रहण ही भारत में दिखाई देगा। इसी कारण इस दिन सूतक काल मान्य होगा। सूतक काल सुबह 9:39 बजे से शुरू होकर ग्रहण समाप्ति के साथ शाम 6:46 बजे तक रहेगा। चंद्र ग्रहण चंद्रोदय के साथ शाम 6:26 बजे प्रारंभ होकर 6:46 बजे समाप्त होगा। यह ग्रहण वास्तव में खग्रास चंद्रग्रहण है, किंतु भारत में यह ग्रस्तोदित यानी ग्रहण लगे हुए स्थिति में ही चंद्रमा का उदय होने के कारण खंड चंद्रग्रहण के रूप में दिखाई देगा। दूसरा चंद्र ग्रहण श्रावण पूर्णिमा 28 अगस्त को लगेगा, यह भारत में दिखाई नहीं देगा। इसलिए इस पर सूतक काल लागू नहीं होगा। यह ग्रहण उत्तर और दक्षिण अमेरिका, यूरोप और अफ्रीका के कुछ हिस्सों में देखा जा सकेगा।

2026 में कुल ग्रहण → 4 (2 सूर्यग्रहण + 2 चंद्रग्रहण)

- **भारत में दृश्यमान** → केवल **1 चंद्रग्रहण**
- **दृश्यमान ग्रहण का प्रकार → खंड चंद्रग्रहण (Partial Lunar Eclipse)**
- **दृश्यता नियम** → केवल **दृश्यमान ग्रहण** पर ही **सूतक काल** मान्य
- **सूतक काल लागू** → चंद्रग्रहण में, सूर्यग्रहण में नहीं (यदि अदृश्य हो)
- **17 फरवरी 2026 सूर्यग्रहण** → भारत में **दृश्यमान नहीं**
- **12 अगस्त 2026 सूर्यग्रहण** → भारत में **दृश्यमान नहीं**
- **28 अगस्त 2026 चंद्रग्रहण** → भारत में **दृश्यमान नहीं**
- **मार्च 2026 चंद्रग्रहण** → भारत में **दृश्यमान (खंड)**
- **ग्रहण प्रकार** → सूर्यग्रहण = अमावस्या, चंद्रग्रहण = पूर्णिमा
- **चंद्रग्रहण कारण** → पृथ्वी की छाया चंद्रमा पर पड़ना
- **सूर्यग्रहण कारण** → चंद्रमा का सूर्य को ढकना
- **भारत में सूतक मान्यता** → केवल **दृश्य ग्रहण** पर

176 वर्षों में तीसरा सबसे गर्म साल रहा 2025 : डब्ल्यूएमओ

ब्रसेल्स, रायटर : साल 2025 पिछले 176 वर्षों में दुनिया का तीसरा सबसे गर्म वर्ष रहा। विश्व मौसम विज्ञान संगठन (डब्ल्यूएमओ) ने पुष्टि की है कि धरती ने अब तक का सबसे लंबा दौर 1.5 डिग्री सेल्सियस से अधिक औसत तापमान के साथ पूरा किया है। डब्ल्यूएमओ द्वारा संकलित आठ वैश्विक जलवायु आंकड़ों में से छह ने 2025 को तीसरा सबसे गर्म साल बताया, जबकि दो ने इसे दूसरा स्थान दिया। एनओएए के अनुसार भी 1850 से शुरू रिकार्ड में 2025 तीसरे स्थान पर है। सबसे गर्म साल का रिकार्ड 2024 के नाम है। 2025 ने पहला ऐसा तीन वर्षीय दौर पूरा किया, जिसमें औसत वैश्विक तापमान औद्योगिक युग से 1.5 डिग्री सेल्सियस अधिक रहा। विज्ञानियों का कहना है कि यह सीमा पार होने से लंबी और घातक हीटवेव, भीषण तूफान, बाढ़ और सूखे जैसी आपदाएं बढ़ेंगी।

2025 → पिछले **176 वर्षों में तीसरा सबसे गर्म वर्ष**

- **Source** → **World Meteorological Organization (WMO)**
- **Temperature Threshold** → 1.5°C से अधिक औसत तापमान
- **Record Holder** → **2024 = सबसे गर्म वर्ष**
- **Data Basis** → 8 वैश्विक जलवायु डेटासेट
- **Industrial Era Base** → 1850–1900
- **Three-year stretch** → पहली बार 3 साल लगातार 1.5°C से ऊपर
- **Impact Warning** → Heatwaves, Floods, Droughts, Cyclones
- **Paris Agreement Limit** → 1.5°C लक्ष्य
- **Greenhouse Gases** → CO_2, CH_4, N_2O
- **WMO** → UN की विशेष एजेंसी (स्थापना 1950)
- **HQ of WMO** → जिनेवा, स्विट्ज़रलैंड

जिमी वेल्स और लैरी सेंगर ने लांच किया विकिपीडिया

2001 में आज ही के दिन अमेरिका में जिमी वेल्स और लैरी सेंगर ने विकिपीडिया को लांच किया था। यह दुनिया का सबसे बड़ा मुफ्त आनलाइन ज्ञानकोश है। शुरुआत में इसे अंग्रेजी भाषा में लांच किया गया था। अब यह 300 से अधिक भाषाओं में उपलब्ध है। इसका पूरी दुनिया में प्रयोग होता है।

एलीशा ओटिस ने लिफ्टों के लिए भाप इंजन का प्राप्त किया पेटेंट

1861 में आज ही अमेरिका में आविष्कारक एलीशा ग्रेव्स ओटिस ने लिफ्टों के लिए विशेष रूप से डिजाइन किए गए भाप इंजन का पेटेंट प्राप्त किया था। इस आविष्कार से लिफ्टों को उन इमारतों में स्वतंत्र रूप से संचालित करने की सुविधा मिली जिनमें केंद्रीय विद्युत स्रोत नहीं था।

मनुष्य की ऊर्जा का आधार सूर्य

रघोत्तम शुक्ल

मकर संक्रांति

> त्रिदोषों यानी वात, पित्त और कफ में पित्त के स्वामी हैं सूर्यदेव, जो काल पुरुष के मुख पर अधिकार रखते हैं

पृथ्वी की चार गतियां हैं। तीन तो सर्वविदित हैं : यानी अपनी धुरी पर 24 घंटे में एक परिभ्रमण कर लेना, 365 दिन और छह घंटे में सूर्य की एक परिक्रमा करना एवं छह-छह महीने में क्रम से अपने दोनों ध्रुवों को सूर्य की ओर झुका देना। हालांकि इस बारे में बहुत कम लोग ही यह जानते हैं कि पृथ्वी की एक चौथी गति भी है, जिसे तकनीकी तौर पर "प्रिसीजन आफ इक्वीनोक्सेस" कहा गया है। इसे 'बसंत संपात' भी कहते हैं। इसमें पृथ्वी अपना धुरी केंद्र थोड़ा बदल देती है। यह घटना 25,827 वर्ष में घटित होती है। इसे भारत के हिंदुओं ने खोजा (कीरोज बुक आफ नंबर्स- पेज- 11) था।

यहां हम बात करते हैं ऊपर संदर्भित तीसरी गति की, जो सूर्य के क्रमशः मकर एवं कर्क राशि में प्रवेश करने पर होती है। मकर प्रवेश होने पर, पृथ्वी का उत्तरी ध्रुव सूर्योन्मुख हो जाता है और कर्क प्रवेश पर दक्षिणी ध्रुव। हम उत्तरी गोलार्ध में रहते हैं और मकर प्रवेश पर हमारे भू-भाग को सूर्य से अधिक ताप और ऊर्जा मिलने लगती है। इसे हम मकर संक्रांति कहते हैं और विभिन्न नामों से त्योहार के रूप में मनाते हैं। हम अधिक लाभान्वित होने लगते हैं, क्योंकि सौर ऊर्जा हमारी जीवनाधार है। इसी अवधि में सर्वश्रेष्ठ बसंत ऋतु होती है।

गीता में भगवान श्रीकृष्ण ने अपने को "ऋतूना कुसुमाकरः" कहा है। उत्तरायण में प्राण त्यागने वाले ब्रह्म को प्राप्त होते हैं, ऐसा श्रीमद्भगवद्गीता के अध्याय-8, श्लोक 24 में उल्लेख है :

अग्निर्ज्योतिरहः शुक्लः षण्मासा उत्तरायणम्। तत्र प्रयाता गच्छन्ति ब्रह्म ब्रह्मविदो जनाः।।

यही कारण है कि भीष्म पितामह शर शैया पर पड़े-पड़े मृत्यु के लिए उत्तरायण सूर्य होने की प्रतीक्षा करते रहे, क्योंकि उन्हें इच्छा मृत्यु का वरदान प्राप्त था। चूंकि सूर्य पृथ्वीवासियों के लिए प्राण पोषक है, अतः देवता मान्य है।

वाल्मीकि रामायण के अनुसार, स्वयं भगवान राम ने रावण को पराजित/ वध करने हेतु शक्ति अर्जन के लिए वहीं रण क्षेत्र में तीन बार 'आदित्य हृदय' स्तोत्र का पाठ किया था। उन्हें यह परामर्श अगस्त्य ऋषि ने दिया था।

वहीं ज्योतिष शास्त्र में सूर्य आत्मकारक ग्रह तथा लग्न का कारक मान्य है। लग्न में सभी भाव/ गृह समाहित माने जाते हैं। सूर्यदेव काल पुरुष के मुख पर अधिकार रखते हैं और त्रिदोषों (वात, पित्त, कफ) में पित्त के स्वामी हैं।

वस्तुतः मकर संक्रांति सूर्योपासना का ही पर्व है। इस बार यह पर्व 15 जनवरी को है, क्योंकि सूर्य देव 14 की रात्रि में मकर प्रवेश करेंगे। चूंकि उदया तिथि मान्य होती है, इसलिए मकर संक्रांति आज यानी 15 जनवरी को ही मानी जानी चाहिए। माना जाता है कि आज से सर्दी का असर कम होना आरंभ होता है।

(लेखक पूर्व प्रशासनिक अधिकारी हैं)

- **मकर संक्रांति** → सूर्य का **मकर राशि में प्रवेश**
  - **खगोलीय घटना** → **उत्तरायण की शुरुआत**
  - **सामान्य तिथि** → **14 या 15 जनवरी**
  - **सूर्य की स्थिति** → दक्षिणायन से उत्तरायण की ओर
  - **पृथ्वी की गति** → **अक्षीय झुकाव (23.5°)** कारण ऋतुएँ
  - **पृथ्वी की कक्षीय गति** → 365 दिन 6 घंटे
  - **उत्तरायण प्रभाव** → दिन बड़े, रात छोटी
  - **दक्षिणायन** → 21 जून के बाद शुरु
  - **वसंत विषुव** → 21 मार्च
  - **शरद विषुव** → 23 सितंबर
  - **कर्क संक्रांति** → सूर्य का कर्क राशि में प्रवेश (21 जून के आसपास)
  - **मकर संक्रांति का प्रकार → सौर पर्व**
  - **ऋतुओं का कारण** → पृथ्वी का झुकाव, न कि दूरी
  - **ट्रॉपिक ऑफ कैंसर** → 23.5° उत्तर
  - **ट्रॉपिक ऑफ कैप्रिकॉर्न** → 23.5° दक्षिण

Dainik Jagaran Page

नन्हें कैप्सूल ने पीएसएलवी-सी62 से अलग होने के बाद डाटा भेजा

- विफल रहे पीएसएलवी-सी62 मिशन से सफलतापूर्व लांच हुआ स्पेन का पेलोड

चेन्नई, प्रेट्र : भारतीय अतंरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) के राकेट पीएसएलवी-सी62 मिशन में हुई विफलता के बीच एक चौंकाने वाली घटना हुई है। इसरो के राकेट से ले जाए गए विदेशी छोटे सैटेलाइट पुनः प्रवेश कैप्सूल 'केआइडी' ने सक्रिय रहकर डाटा भेजा है। इस पेलोड को विकसित करने वाले स्पेनिश स्टार्टअप आर्बिटल पैराडाइम ने यह दावा किया है। हालांकि, इसरो ने कंपनी के इस दावे पर कोई टिप्पणी या पुष्टि नहीं की है।

इसरो के अध्यक्ष वी. नारायणन ने गत मंगलवार को बताया था कि 12 जनवरी को पीएसएलवी-सी62 मिशन विफल हो गया क्योंकि राकेट "तीसरे चरण में व्यवधान के कारण उड़ान पथ में विचलन" के चलते निर्धारित कक्षा तक नहीं पहुंच सका। बाद में पता चला कि एक नन्हा विदेशी सैटेलाइट सक्रिय रहा और लक्ष्य तक भी पहुंचा। 25 किलोग्राम

वी. नारायणन।

> स्पेनिश स्टार्टअप आर्बिटल पैराडाइम का दावा, इसरो ने दावे की पुष्टि नहीं की है

वजन वाला स्पेनी सैटेलाइट केस्ट्रल इनीशियल टेक्नोलाजी डिमांस्टेटर (केआइडी) पीएसएलवी-सी62 मिशन के 16 उपग्रहों में से एक था। स्पैनिश स्टार्टअप आर्बिटल पैराडाइम ने बताया, "हमारा केआइडी कैप्सूल सभी बाधाओं के खिलाफ पीएसएलवी-सी62 से अलग हुआ, चालू हुआ और डाटा भेजा।" यह मिशन 512 किमी की ऊंचाई पर सूर्य समकालिक कक्षा में लांच वाहन (पीएसएलवी-सी62) से 15 उपग्रहों को तैनात करने के लिए था और केआइडी कैप्सूल को राकेट से 504 किमी की कम ऊंचाई पर अलग होने वाला अंतिम यात्री (16वां पेलोड) होना था। बाद में, राकेट के चौथे चरण (पीएस4) और केआइडी कैप्सूल को पृथ्वी के वायुमंडल में पुनः प्रवेश करना और दक्षिण प्रशांत महासागर में गिरना निर्धारित था।

स्पेनिश स्टार्टअप ने बताया कि जैसे ही पीएसएलवी-सी62 मिशन विफल हुआ और सभी अन्य उपग्रह अंतरिक्ष में खो गए केआइडी कैप्सूल अकेला सक्रिय रहा, पीएसएलवी-सी62 राकेट से अलग हुआ, चालू हुआ और डाटा भेजा।" कंपनी की वेबसाइट के अनुसार, आर्बिटल पैराडाइम सबसे अधिक बार और कुशलता से पुनः उपयोग योग्य लाजिस्टिक, कार्गो और अंतरिक्ष वापसी वाहन बनाने में संलग्न है।

- **PSLV-C62** → ISRO का लॉन्च वाहन मिशन
  - **घटना** → मिशन विफल होने के बाद भी **डेटा ट्रांसमिट हुआ**
  - **सैटेलाइट** → स्पेन का छोटा उपग्रह (Startup payload)
  - **कैप्सूल नाम** → **CADI (Capsule for Atmospheric Data & Imaging)**
  - **कैप्सूल स्थिति** → रॉकेट से अलग होकर **सक्रिय रहा**
  - **लॉन्च साइट** → **श्रीहरिकोटा (SDSC-SHAR)**
  - **PSLV चरण** → 4-स्टेज रॉकेट (Solid–Liquid–Solid–Liquid)
  - **कक्षा लक्ष्य** → **Sun-Synchronous Orbit (SSO)**
  - **ISRO प्रमुख** → वी. नारायणन (समाचार अनुसार)
  - **निजी भागीदारी** → विदेशी स्टार्टअप पेलोड
  - **NewSpace India Ltd (NSIL)** → ISRO की वाणिज्यिक शाखा
  - **Antrix Corp** → ISRO की पुरानी व्यावसायिक इकाई
  - **Reusability Focus** → कैप्सूल, रीयूजेबल टेक्नोलॉजी पर काम
  - **PSLV full form** → Polar Satellite Launch Vehicle
  - **Gaganyaan** → मानव अंतरिक्ष मिशन
  - **LVM3 (Gaganyaan vehicle)** → Heavy lift rocket
  - **SSLV** → Small Satellite Launch Vehicle
  - **IN-SPACe** → निजी अंतरिक्ष गतिविधियों का नियामक
  - **NSIL role** → Launch services, transfer of tech
  - **ISRO स्थापना** → 1969
  - **ISRO मुख्यालय** → बेंगलुरु

BIHAR

Dainik Jagaran Page

Hindustan Page

प्रमुख राज्यों का महिला सशक्तीकरण सूचकांक

राज्य	आर्थिक सशक्तीकरण	फैसले लेने में भूमिका	स्वास्थ्य एवं पोषण	लैंगिक भूमिका	डब्ल्यूईआइ
आंध्र प्रदेश	4.5	1.24	8.47	3.14	17.36
बिहार	3.6	2.86	9.21	3.52	19.18
कर्नाटक	6.41	1	10.65	0.97	19.03
उत्तर प्रदेश	3.33	2.58	9.17	3.98	19.06
केरल	3.28	2.49	10.14	5.32	21.23
मध्य प्रदेश	3.32	2.16	9.4	4.47	19.35
जम्मू एवं कश्मीर	5.11	0.8	10.9	4.59	21.41
हरियाणा	3.53	2.66	9.49	5.45	21.13
पंजाब	4.78	3.66	9.11	5.11	22.67

उप्र–बिहार का बेहतर प्रदर्शन

नेशनल फैमिली हेल्थ सर्वे के आंकड़ों का विश्लेषण करके तैयार किए गए महिला सशक्तीकरण सूचकांक (डब्लूईआइ) की बात करें तो उत्तर भारत के प्रमुख राज्य उत्तर प्रदेश और बिहार का स्कोर क्रमशः 19 .06 और 19 .18 है। वहीं आंध्र प्रदेश और तेलंगाना जैसे दक्षिण भारतीय राज्यों का स्कोर 17 .36 और 17 .35 है।

गोवा, सिक्किम व हिमाचल हैं आगे

महिला सशक्तीकरण के मोर्चे पर गोवा 27 .4 अंक के साथ शीर्ष पर है। वहीं सिक्किम और हिमाचल प्रदेश का स्कोर 25 .9 और हिमाचल प्रदेश का स्कोर 24 .2 है। वहीं बंगाल 17 .5, आंध्र प्रदेश 17 .4 और तेलंगाना 17 .4 इस मामले में निचले स्तर पर हैं।

जीविका दीदियों ने रिकॉर्ड नौ हजार करोड़ रुपये कर्ज लिया

वित्तीय वर्ष की समाप्ति यानी अप्रैल तक 12600 करोड़ लोन लेने की उम्मीद

उत्साह

- रोजगार और व्यवसाय के लिए जीविका दीदियों ने बैंकों से लिया ऋण
- मुख्यमंत्री महिला रोजगार योजना के बाद भी बढ़ा कर्ज का दायरा
- जीविका समूह की ओर से बैंकों को लोन वापसी की दर 99%

पटना, हिन्दुस्तान ब्यूरो। जीविका दीदियों ने अपने रोजगार-व्यवसाय के लिए इस साल रिकॉर्ड नौ हजार करोड़ रुपये का लोन (ऋण) लिया है। अप्रैल से दिसंबर यह लोन विभिन्न बैंकों से लिये गए हैं। वित्तीय वर्ष की समाप्ति (अप्रैल) तक 12 हजार 600 करोड़ से अधिक लोन लिये जाने की उम्मीद है।

पिछले वित्तीय वर्ष में यह आंकड़ा करीब 12 हजार करोड़ था। ये सभी आंकड़े ग्रामीण क्षेत्र की जीविका दीदियों के हैं। मुख्यमंत्री महिला रोजगार योजना में एक करोड़ 56 लाख महिलाओं को 10-10 हजार रुपये अनुदान देने के बाद भी काफी संख्या में लोन लिये गए हैं। जीविका के अधिकारी बताते हैं कि महिला रोजगार योजना में राशि वितरण नहीं हुआ होता तो लोन की राशि और भी अधिक होती। जीविका समूहों के माध्यम से यह राशि दीदियों को जरूरत के अनुसार प्रदान की जाती है। पिछले 18 वर्षों में सालाना लोन प्राप्त करने का यह सालाना आंकड़ा 22 करोड़ से बढ़कर 12 हजार करोड़ रुपये से अधिक तक पहुंच गया है। अब तक समूहों की ओर से एक लाख करोड़ रुपये से अधिक का लेन-देन किया गया है। जीविका दीदियों को और आसानी से कम समय में लोन की प्राप्ति हो, इसके लिए राज्य सरकार ने जीविका निधि का गठन किया है। जल्द ही जीविका निधि के माध्यम से भी दीदियों को लोन मिलने लगेंगे।

एक समूह को छह लाख तक लोन मिलता है

राज्य में 10 लाख 30 हजार जीविका समूह विभिन्न बैंकों से जुड़े हैं। इन समूहों में डेढ़ करोड़ महिलाएं सदस्य हैं। इन समूहों को उनके पूर्व के लोन के रिकॉर्ड को देखते हुए राशि की सीमा तय की जाती है। इस तरह राज्य में करीब दो लाख जीविका समूह ऐसे हैं, जिन्हें छह लाख रुपये तक के सालाना लोन बैंक से मिलते हैं। वहीं, चार लाख समूहों को सालाना तीन लाख तक के लोन मिलते हैं। शेष जीविका समूह को डेढ़ लाख तक के लोन बैंक देते हैं। जीविका समूह की ओर से ही लोन की राशि दीदियों को दी जाती है। सुखद बात यह है कि बैंकों को जीविका समूह द्वारा लोन वापसी की दर भी करीब 99 प्रतिशत है।

दुकानों और पशुपालन के लिए सबसे अधिक लोन लिया

जीविका दीदियां विभिन्न तरह के व्यवसाय के लिए लोन लेती हैं। इनमें सबसे अधिक छोटी दुकानों और पशुपालन के लिए लिये जाते हैं। छोटी दुकानों में चाय, पार्लर, किराना आदि मुख्य हैं। जीविका दीदियां 10 हजार से लेकर डेढ़ लाख रुपये तक का लोन अपने समूह से प्राप्त करती हैं। जीविका दीदियां अपने निजी काम के लिए भी समूह से लोन लेती हैं।

गन्ना यंत्र बैंक बनाने में ली जाएगी जीविका की मदद

70 फीसदी तक अनुदान सरकार देगी

50 फीसदी अनुदान मिलता है सामान्यतः

- गन्ना यंत्र बैंक चीनी मिल प्रक्षेत्र में स्थापित होंगे

पटना, हिन्दुस्तान ब्यूरो। राज्य सरकार गन्ना यंत्र बैंकों की स्थापना में जीविका दीदियों की मदद लेगी। इसके लिए उन्हें सरकार आर्थिक सहायता देगी। गन्ना उद्योग विभाग ने इसकी कार्ययोजना बनाकर उस पर काम शुरू कर दिया है। गन्ना यंत्र बैंकों की स्थापना चीनी मिल प्रक्षेत्र में ही स्थापित की जानी है। ताकि किसानों को अनावश्यक रूप से गन्ना की खेती के लिए जरूरी यंत्रों के लिए भटकना नहीं पड़े।

विभाग के अनुसार गन्ना यंत्र बैंक की स्थापना करने वाली जीविका दीदियों को सामान्य से अधिक अनुदान दिया जाएगा। सामान्यतया गन्ना यंत्र के लिए 50 फीसदी अनुदान दिया जाता है। लेकिन जीविका दीदियों को गन्ना यंत्र बैंक की स्थापना 70 फीसदी अनुदान मिलेगा। ईबीसी, एससी-एसटी वर्ग के लोगों को 60 फीसदी तक अनुदान देय है।

दरअसल, गन्ना की खेती में आधुनिक कृषि यंत्रों को बढ़ावा देने के लिए गन्ना यंत्रीकरण योजना का कार्यान्वयन किया जा रहा है। इसी क्रम में राज्य सरकार ने गन्ना यंत्र बैंकों की स्थापना का निर्णय लिया है। चीनी मिल के निर्धारित प्रक्षेत्रों में ही इसकी स्थापना की जानी है। जीविका समूह द्वारा चयनित स्थानों पर इसकी स्थापना किए जाने पर उन्हें 70 फीसदी तक अनुदान मिलेगा। विभाग पूरे प्रदेश में नये सिरे से गन्ना यंत्र बैंकों की स्थापना करना चाहती है। इसी लक्ष्य को लेकर विभाग ने इस योजना का विस्तार किया है।

Hindustan Page

बिहार देश ही नहीं दुनिया में मखाना उत्पादन का सबसे बड़ा केंद्र, यहां होती **85 प्रतिशत उपज** प्रदेश के 17 जिलों में खेती का विस्तार

बिचौलियों के बीच से मखाना किसानों के मुहाने तक लाभ पहुंचाने की चुनौती

शोध, नवाचार एवं संस्कृति से जोड़ किसानों को उत्पादन बढ़ाने के लिए जागरूक कर रही सरकार, बीज से लेकर फसल तैयार करने वाले उपकरण पर अनुदान का प्रविधान

पूर्णिया में मखाना की गुड़ी निकालता किसान • जागरण

जागरण टीम, पटना : वैश्विक उत्पादन का लगभग 85–90 प्रतिशत मखाना बिहार में होता है। राज्य के दरभंगा, मधुबनी, सहरसा, सुपौल, मधेपुरा, पूर्णिया, किशनगंज, कटिहार एवं अररिया इसके पारंपरिक जिले माने जाते हैं। धीरे-धीरे खगड़िया, समस्तीपुर, भागलपुर, सीतामढ़ी, पूर्वी व पश्चिमी चंपारण एवं मुजफ्फरपुर में मखाना की खेती का विस्तार हुआ है। राज्य में मखाना अब केवल तालाबों तक सीमित फसल नहीं रह गई है, बल्कि यह एक उभरता हुआ एग्रो-इंडस्ट्रियल सेक्टर बनता जा रहा है। मखाना बिहार की कृषि अर्थव्यवस्था का नया मजबूत स्तंभ बन सकता है, बशर्ते तकनीक, बाजार और नीति के स्तर पर प्रयासों को निरंतर गति दी जाए। साथ ही उन्नत प्रभेदों, बीजों और उपकरणों के वितरण से न सिर्फ मखाना उत्पादन को बढ़ावा मिलेगा, बल्कि किसानों की आय में भी वृद्धि होगी। मखाना किसानों की प्रमुख समस्याओं में पारंपरिक तकनीक, अधिक श्रम, कम उत्पादकता एवं विपणन की दिक्कतें सम्मिलित हैं। इसे देखते हुए केंद्र सरकार की पीएम-एफएमई योजना के तहत मखाना आधारित फूड प्रोसेसिंग यूनिट्स को वित्तीय सहायता दी जा रही है। बिहार सरकार ने मखाना विकास योजना, बीज उत्पादन कार्यक्रम और आधुनिक तकनीक (तालाब की जगह खेत आधारित मखाना खेती) को बढ़ावा देना शुरू किया है। किसानों को प्रशिक्षण, अनुदान एवं बाजार से जोड़ने की पहल की जा रही है।

प्रदेश में बारह सौ छोटी-बड़ी इकाइयां: प्रदेश में मखाना से जुड़ी करीब 900 से 1200 छोटी-बड़ी इकाइयां सक्रिय हैं। इनमें अधिकांश कुटीर व लघु उद्योग हैं, जो परंपरागत ढंग से मखाना फोड़ने, सफाई, ग्रेडिंग एवं पैकिंग का काम करते हैं। इसके अतिरिक्त पटना, दरभंगा एवं पूर्णिया जैसे शहरों में वैल्यू एडिशन आधारित यूनिट भी शुरू हुई हैं, जहां भुना मखाना, फ्लेवर्ड मखाना, मखाना आटा और रेडी-टू-इट उत्पाद तैयार किए जा रहे हैं। कृषि विशेषज्ञों का मानना है कि अगले पांच–सात वर्षों में मखाना बाजार का आकार दोगुना हो सकता है। प्रोसेसिंग, ब्रांडिंग एवं निर्यात को बढ़ावा मिलने से किसानों के साथ-साथ उद्यमियों के लिए भी बड़े अवसर बनेंगे। राज्य में कुल कृषि योग्य भूमि का बड़ा हिस्सा धान, गेहूं, मक्का, दलहन और तिलहन की खेती में लगा है। आधिकारिक आकलन के अनुसार राज्य में लगभग 80 से 85 लाख हेक्टेयर क्षेत्र में विभिन्न फसलों की खेती होती है। इसके मुकाबले मखाना का रकबा अभी लगभग 35 हजार हेक्टेयर ही है। कृषि विभाग अब सीमांचल, कोसी एवं उत्तर बिहार के उन इलाकों में मखाना को बढ़ावा दे रहा है, जहां जलभराव की समस्या रहती है। खेत आधारित मखाना तकनीक से पश्चिमी चंपारण, सीतामढ़ी एवं गोपालगंज जैसे नए जिलों में भी संभावनाएं तलाशी जा रही हैं। इसके लिए विभाग डेमो प्लाट, तकनीकी मार्गदर्शन और अनुदान उपलब्ध करा रहा है। नए क्षेत्रों में मखाना की खेती शुरू होने से अन्य फसलों की पैदावार में दो से तीन प्रतिशत से अधिक की कमी की संभावना नहीं है। विशेषज्ञों के अनुसार मखाना मुख्य रूप से जलभराव या कम उपयोग वाली भूमि में उगाया जा रहा है, इसलिए, इसका सीधा असर धान या गेहूं जैसी मुख्य फसलों पर सीमित रहेगा।

बिहार देश ही नहीं, दुनिया में मखाना उत्पादन का सबसे बड़ा केंद्र है। सुपर फूड के नाम से ख्यात मखाना की मांगों में बीते चार वर्षों में अप्रत्याशित रूप से वृद्धि हुई है। यही कारण है कि खेती के रकबे, किसानों की दिलचस्पी और कीमत में बढ़ोतरी हुई है। इसके उत्पादन एवं व्यापार को बढ़ाने के लिए राज्य व केंद्र सरकार भी प्रयासरत है। मखाना बोर्ड का गठन, अनुसंधान, उन्नत खेती एवं प्रसंस्करण तकनीकों के विकास, ग्रेडिंग, ड्राइंग, पापिंग एवं पैकेजिंग के लिए आधुनिक बुनियादी ढांचे की स्थापना, मूल्य संवर्धन, ब्रांडिंग, बाजार संबंध व निर्यात अवसरों को मजबूत करने पर विशेष जोर दे रही है। संभावना है कि इन पहल के उपरांत अब राज्य में मखाने की खेती आधुनिक तकनीक से होगी, जिससे उत्पादन और किसानों की आय तेजी से बढ़ेगी। फिलहाल हालात इतने अनुकूल नहीं। क्योंकि, जिस हिसाब से मांग व बाजार मूल्य में वृद्धि हुई है उस अनुपात में किसानों को इसका लाभ नहीं मिल पा रहा है। इसका लाभ कारोबारी व बिचौलिये उठा ले जा रहे हैं। इनके बीच से लाभ को किसानों के मुहाने तक पहुंचाने की चुनौती है। आंकड़ों के मुताबिक, वर्ष 2005 के पूर्व जहां मखाना जलकरों से राजस्व प्राप्ति 3.83 करोड़ रुपये थी। वहीं 2023-24 में यह बढ़कर 17.52 करोड़ रुपये हो गई है। राजस्व प्राप्ति में 4.57 गुना की बढ़ोतरी हो चुकी है। वहीं वर्ष 2012 तक बिहार में मखाना की खेती लगभग 13,000 हेक्टेयर में होती थी। अब यह बढ़कर 35,224 हेक्टेयर हो गया है। विशेषज्ञों और किसानों का मानना है कि बाजार मूल्य में तेजी, बैंक ऋण की उपलब्धता, सरकारी प्रोत्साहन और नकदी फसल के रूप में पहचान मिलने से किसान पारंपरिक फसलों की जगह मखाना की खेती की ओर तेजी से बढ़े हैं। हालांकि यह खेती श्रमिक आधारित है और कुशल मजदूरों की कमी बड़ी बाधा बनी हुई है। उनका कहना है कि यदि प्रोसेसिंग इकाइयां, सहकारी विपणन व्यवस्था और न्यूनतम समर्थन मूल्य जैसी व्यवस्था लागू हो, तो मखाना की बढ़ती कीमतों का वास्तविक लाभ सीधे उत्पादकों तक पहुंच सकता है।

मखाना बोर्ड का गठन होने से किसानों को उचित दाम, तकनीकी सहायता, बेहतर बाजार, सब्सिडी और रोजगार के अवसर मिलेंगे। इससे उनकी आय बढ़ेगी और बिचौलिये कम होंगे। आधुनिक खेती व प्रोसेसिंग से उत्पादन और गुणवत्ता में सुधार होगा। जिससे मखाना को वैश्विक पहचान मिलेगी।

–डा. मनोज कुमार, वरिष्ठ वितानी, राष्ट्रीय मखाना अनुसंधान केंद्र, दरभंगा

कटिहार में मखाना की पैकिंग करते श्रमिक • जागरण

किसानों तक नहीं पहुंच पाता वास्तविक लाभ

कीमतों में वृद्धि का पूरा लाभ किसानों तक नहीं पहुंच पा रहा है। किसानों को सिर्फ 500 से 700 रुपये प्रति किलो की दर से ही प्राप्त हो पा रहा है। यानी कुल मूल्य का करीब 55 से 60 प्रतिशत हिस्सा ही किसान के हिस्से आता है, जबकि शेष लाभ बिचौलियों, प्रोसेसिंग यूनिटों और व्यापारियों के पास चला जाता है। इसका मुख्य कारण अधिकांश किसान कच्चा मखाना बेचने को मजबूर हैं। लावा तैयार करने, ग्रेडिंग, पैकिंग और ब्रांडिंग की सुविधाएं स्थानीय स्तर पर उपलब्ध नहीं होने से किसान मूल्यवर्धन का लाभ नहीं उठा पा रहे हैं। बाजार तक सीधी पहुंच न होने के कारण उन्हें व्यापारियों पर निर्भर रहना पड़ता है। मखाना उत्पादक किसान दुर्गा मुखिया, परमेश्वर मुखिया तथा ढोकाई मुखिया सहित अन्य किसानों का कहना है कि प्रति एकड़ मखाना की खेती करने की लागत 25 से 35 हजार रुपये तक आती है। तैयार फसल को पोखर से बाहर निकालने की मजदूरी 6000 रुपये प्रति क्विंटल देनी होती है। हाथ से मखाना पीट कर तैयार करने वाले मजदूरों को प्रति क्विंटल 10 प्रतिशत की दर से भुगतान करना पड़ता है। व्यापारी वर्ग मखाना की फसल तैयार होने के समय सस्ते दामों में खरीद कर उसकी पैकिंग कर पूरे साल दो से तीन गुना ऊंची कीमत बेचकर कमा रहे हैं। दाम बढ़ने का कोई फायदा किसानों को नहीं मिला है। हमारे पास इतनी पूंजी नहीं कि दाम बढ़ने का इंतजार किया जा सके। मधुबनी में मखाना भूनकर हाथ से पीटकर तैयार करने वाले मजदूर मुन्ना मुखिया, फचकौड़ी मुखिया, रामप्रवेश मुखिया और मोहन मुखिया ने बताया कि पिछले वर्ष मखाना की फसल तैयार करने के समय इसकी कीमत 500-600 रुपये प्रति किलोग्राम थी। उस समय व्यापारियों ने मखाना खरीद लिया फिर उसकी पैकिंग कर आज अपने-अपने ब्रांड के नाम पर 800-900 रुपये प्रति किलो की दर से बेच रहे हैं। मखाना उत्पादक किसान भी मजदूर बनकर रह गए हैं।

लगातार बढ़ रहा रकबा

उत्तर बिहार के मधुबनी और दरभंगा में प्रमुख रूप से मखाना की खेती होती है। दोनों जिलों को मिलाकर 9,570 हेक्टेयर में इस बार खेती हुई है। मधुबनी में बीते चार वर्षों में 273 व दरभंगा में 1405 हेक्टेयर में मखाना की खेती बढ़ी है। कोसी और सीमांचल के क्षेत्र में करीब 35–40 प्रतिशत रकबा बढ़ा है। सुपौल 300 व मधेपुरा 94 हेक्टेयर की वृद्धि हुई है। इस वर्ष करीब 250 नए किसान इससे जुड़े हैं। खगड़िया में 486 हेक्टेयर और सहरसा जिले में भी छिटपुट जगहों पर मखाना की खेती की जा रही है। भागलपुर में पहली बार खेती की औपचारिक शुरुआत की जा रही है। उद्यान विभाग ने लगभग 21 हेक्टेयर में मखाना की खेती का लक्ष्य तय किया है।

किसानों और उद्यमियों की प्रमुख समस्याएं

कटिहार में मखाना फोड़ी करते मजदूर।

- पानी में अब भी पारंपरिक तरीके से ही काम करने से हो रही कठिनाई
- फसल कटाई और प्रसंस्करण में मशीनीकरण की कमी
- कीमतों में उतार–चढ़ाव, बिचौलियों को ज्यादा मुनाफा, बाजार तक पहुंचने में दिक्कतें
- मखाना व्यवसाय को बढ़ावा देने के लिए सरकारी स्तर पर अपेक्षित प्रयासों की कमी
- कृषि एवं प्रसंस्कृत खाद्य उत्पाद निर्यात विकास प्राधिकरण व डायरेक्टरेट जनरल आफ फारेन ट्रेड का कार्यालय नहीं होने से मखाना निर्यात को नहीं मिल पा रहा प्रोत्साहन
- बिहार के मखाना उद्यमियों को निर्यात संबंधी मार्गदर्शन और सुविधाएं दूसरे राज्यों पर निर्भर रहकर लेनी पड़ती
- मखाना की खेती में अधिक मेहनत और लागत के बावजूद किसानों को उसकी तुलना में कम कीमत मिलना
- समुचित बाजार व मूल्य निर्धारित नहीं रहने से किसानों को औने-पौने दामों में बेचने की विवशता
- बाहरी कुशल मजदूरों पर निर्भरता, स्थानीय स्तर पर श्रमिक और प्रोसेसिंग सुविधाओं का अभाव
- न्यूनतम समर्थन मूल्य (एमएसपी) तय नहीं होने से किसानों को उचित मूल्य नहीं मिल पाना।

जिला	किसान	रकबा (हेक्टेयर में)
कटिहार	11,000	9304
पूर्णिया	40,000	9470
अररिया	300	1255
सुपौल	2,200	1011
मधेपुरा	2,100	1033
मधुबनी	20,000	4945
दरभंगा	15,000	4625

बीते चार वर्ष में बाजार में दोगुनी हो गई कीमत

पहले मखाना का औसत खुदरा मूल्य 350 से 500 रुपये प्रति किलो था। वर्तमान में बाजार में 900 से 1200 रुपये प्रति किलो की दर से बिक रहा है। मखाना के दाम में करीब 120 से 150 प्रतिशत तक की वृद्धि हुई है। प्रत्येक जिले से सालाना कारोबार करीब 15 से 30 करोड़ रुपये का होता है। मखाना देश के अन्य राज्यों के साथ विदेश में भी निर्यात किया जा रहा है। जीआइ टैग मिलने के बाद इसकी मांग अंतरराष्ट्रीय स्तर पर बढ़ी है। प्रदेश से इंग्लैंड, कनाडा, अमेरिका, आस्ट्रेलिया, दुबई, इराक, ईरान, सऊदी अरब, कुवैत, कतर, यूक्रेन, कनाडा, नेपाल, सिंगापुर आदि देशों में मखाना भेजा जाता है। इससे किसानों की आर्थिक स्थिति में सुधार देखने को मिला है। अब बैंक भी किसानों को ऋण दे रहे हैं।

मखाना की खेती में काफी मेहनत है। हमसे मखाना खरीद व्यापारी दोगुना दाम में बेचते हैं। हमें आधा ही मिलता है। – मनोज यादव, किसान

अगर सरकार मखाना फसल का एमएसपी निर्धारित कर दे तो किसानों को उत्पाद का उचित मूल्य मिल सकेगा। –रामवरण दास, किसान

खाद्य उत्पादों के निर्यात को बढ़ावा देने के लिए एपीईडीए का कार्यालय बिहार में नहीं है। इससे निर्यात को बढ़ावा नहीं मिल पा रहा है। – मनीष कुमार, मखाना ट्रेडर

वन डिस्ट्रिक्ट वन प्रोडक्ट से मखाना को पहचान मिली है। कारोबारी व उद्यमियों को फायदा हुआ है। मखाना को जीआइ टैग भी मिल गया है। –राजीव झा उद्यमी, मनीगाछी, दरभंगा

तैयारी: बांका, नवादा और सीवान जिले में बन सकता है बिजली घर

बिहार में परमाणु बिजली घर निर्माण का सर्वे पूरा

सर्वे रिपोर्ट बिजली कंपनी को सौंपी गई

- पानी की उपलब्धता और भूकंपीय क्षेत्र के आधार पर होगा स्थल चयन
- एनपीसीआईएल और एनटीपीसी की टीम ने मिलकर सर्वे किया

2027-28 वित्तीय वर्ष से परमाणु बिजली घर का निर्माण शुरू हो सकता है

होगा यह लाभ

स्मॉल मॉड्यूलर रिएक्टर तकनीक को परमाणु बिजली घर में सबसे सुरक्षित व कुशल माना जाता है। परमाणु बिजली घर बनने से बिहार को भविष्य में खपत होने वाली जरूरतों को पूरा करने में सहायता मिलेगी। औद्योगिक विकास को बढ़ावा मिलेगा। रोजगार के अवसर पैदा होंगे और राज्य ऊर्जा क्षेत्र में आत्मनिर्भर बनेगा। अरसा पहले नवादा के रजौली में परमाणु बिजली घर बनाने की बात चली थी पर कतिपय कारणों से वह ठंडे बस्ते में चला गया था।

"परमाणु बिजली घर बनाने के लिए सर्वे रिपोर्ट मिल गई है। सभी पहलुओं पर गौर किया जा रहा है। केंद्र सरकार को भी उस रिपोर्ट की जानकारी दी जा रही है। बिजली घर बनाने को लेकर जल्द ही ठोस कदम उठाए जाएंगे।

– **बिजेन्द्र प्रसाद यादव,** ऊर्जा, योजना एवं विकास मंत्री।

पटना, हिन्दुस्तान ब्यूरो। बिहार में परमाणु बिजली घर बनाने के लिए प्रारम्भिक सर्वे पूरा हो गया है। बांका, नवादा और सीवान में परमाणु बिजली घर बनाने के लिए पिछले साल सर्वे शुरू हुआ था। बिजली कंपनी ने सर्वे रिपोर्ट का अध्ययन भी शुरू कर दिया है। केंद्र सरकार के सहयोग से बिहार में परमाणु बिजली घर बनाने के लिए अब डीपीआर निर्माण पर काम होगा। अगर सब कुछ ठीक रहा तो वित्तीय वर्ष 2027-28 से परमाणु बिजली घर का निर्माण शुरू हो जाएगा।

कंपनी अधिकारियों से मिली जानकारी के अनुसार 24 जून 2025 को पटना में पूर्वी भारत के राज्यों के ऊर्जा मंत्रियों का सम्मेलन हुआ था। उसी सम्मेलन में केंद्रीय ऊर्जा मंत्री मनोहर लाल खट्टर ने घोषणा की थी कि स्मॉल मॉड्यूलर रिएक्टर (एसएमएल) से देश में परमाणु बिजली घर बनाए जाने की योजना है। राज्य सरकार की मांग पर बिहार में भी परमाणु बिजली घर बनाया जाएगा।

केंद्र के निर्देश पर ही कंपनी ने बांका, नवादा और सीवान में परमाणु बिजली घर की संभावनाओं को तलाशने के लिए सर्वे शुरू करवाया। एनपीसीआईएल और एनटीपीसी की टीम ने सर्वे किया और उसकी रिपोर्ट कंपनी को सौंप दी। सर्वे में परमाणु बिजली घर के लिए पानी की उपलब्धता, जमीन, भूकंपीय जोन और आबादी के घनत्व के साथ ही कनेक्टिविटी जैसे पहलुओं की जांच की गई है।

एक मेगावाट के लिए 1800 लीटर पानी चाहिए: सर्वे में परमाणु बिजली घर के लिए आवश्यक पानी पर विशेष फोकस किया गया है। नवादा और बांका में परमाणु बिजली घर के लिए सही लोकेशन बताया गया है। लेकिन इन दोनों जिलों में पानी की कमी पर ध्यान आकृष्ट कराया गया है। सर्वे एजेंसी ने कहा है कि परमाणु बिजली घर के संयंत्रों को ठंडा करने की प्रक्रियाओं के लिए बड़ी मात्रा में पानी की आवश्यकता होती है। पानी का उपयोग मुख्य रूप से रिएक्टर से गर्मी निकालने और टरबाइन को चलाने के लिए भाप बनाने में किया जाता है।

बिजली उत्पादन क्षमता जितनी अधिक होगी, उतनी ही अधिक गर्मी उत्पन्न होगी और उतने ही अधिक पानी की आवश्यकता होगी। एक मेगावाट के लिए हर घंटे 500 से 700 गैलन (लगभग 1,892 से 2,649 लीटर) पानी की जरूरत होती है। सीवान में पानी की प्रचुर उपलब्धता है लेकिन वह भूकम्प के दृष्टिकोण से संवेदनशील है। केंद्र सरकार की सलाह पर ही परमाणु बिजली घर बनाने का फैसला होगा। बिहार बिजली कंपनी के आधिकारिक सूत्रों के अनुसार सीवान के भूकम्प के दृष्टिकोण से संवेदनशील होने के कारण नवादा और बांका में परमाणु बिजली घर के लिए आवश्यक कार्रवाई शुरू कर दी गई है।

NATIONAL

Hindustan Page

अमेरिका के राजदूत सर्जियो गोर ने राष्ट्रपति मुर्मू को अपना परिचय पत्र सौंपा, कहा

मैं साझेदारी को मजबूत करने को उत्सुक हूं

जनसत्ता ब्यूरो
नई दिल्ली, 14 जनवरी।

भारत में अमेरिका के राजदूत सर्जियो गोर ने बुधवार को राष्ट्रपति भवन में राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू को अपना परिचय पत्र सौंपा। एक आधिकारिक बयान से यह जानकारी मिली।

अमेरिकी दूतावास के मुताबिक राजदूत गोर (38) ने कहा कि भारतीय राष्ट्रपति मुर्मू को अपना परिचय पत्र प्रस्तुत करना और अमेरिका-भारत संबंधों में इतनी संभावनाओं और अवसरों से भरे समय में भारत में सेवा करना मेरे लिए सम्मान की बात है। मैं रक्षा, व्यापार, प्रौद्योगिकी और महत्त्वपूर्ण खनिजों के क्षेत्र में हमारी साझा प्राथमिकताओं को आगे बढ़ाने और हमारे दो महान लोकतंत्रों के बीच साझेदारी को और मजबूत करने के लिए

भारत सरकार और भारतीय जनता के साथ मिलकर काम करने के लिए उत्सुक हूं।

गोर ने पिछले साल नवंबर के मध्य में भारत में अमेरिका के राजदूत के रूप में शपथ ली थी। अमेरिकी सीनेट ने पिछले साल अक्तूबर में उनकी नियुक्ति की पुष्टि की थी।

गोर 'वाइट हाउस' के कार्मिक निदेशक के रूप में कार्यरत थे। राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने अगस्त 2025 में उन्हें भारत में अगला अमेरिकी दूत नामित किया। राष्ट्रपति कार्यालय द्वारा जारी बयान में कहा गया है कि मुर्मू ने राष्ट्रपति भवन में आयोजित एक समारोह में गोर से उनका परिचय पत्र स्वीकार किया। गोर ने सोमवार को तनावपूर्ण संबंधों को फिर से सुधारने के इरादे का संकेत देते हुए कहा कि अमेरिका के लिए भारत जितना आवश्यक कोई देश नहीं है। उन्होंने जोर देकर कहा कि दोनों पक्ष व्यापार समझौते को अंतिम रूप देने के लिए सक्रिय रूप से प्रयासरत हैं। बयान में कहा गया है कि गोर के अलावा त्रिनिदाद और टोबैगो गणराज्य के उच्चायुक्त चंद्रदाथ सिंह और आस्ट्रिया गणराज्य के राजदूत राबर्ट जिस्चग ने भी मुर्मू को अपने परिचय पत्र प्रस्तुत किए।

Agrément / Letters of Credence – राजदूत द्वारा राष्ट्रपति को परिचय पत्र सौंपने की औपचारिक प्रक्रिया

- **भारत में राजदूतों की नियुक्ति** – राष्ट्रपति के पास प्रमाण-पत्र प्रस्तुत किया जाता है *(Article 75 read with diplomatic practice)*
- **भारत–अमेरिका संबंध** – *Comprehensive Global Strategic Partnership* (2016 से)
- **QUAD सदस्य देश** – भारत, अमेरिका, जापान, ऑस्ट्रेलिया
- **Indo-Pacific Strategy** – अमेरिका की प्रमुख विदेश नीति प्राथमिकता
- **2+2 Dialogue** – भारत–अमेरिका रक्षा व विदेश मंत्रियों की वार्ता व्यवस्था
- **Liaison with MEA** – सभी विदेशी राजनयिक कार्य विदेश मंत्रालय के माध्यम से

भूजल और जैव विविधता को खतरे की चेतावनी | शोध | डेनमार्क दूतावास और हरियाणा राज्य वन विभाग ने किया अध्ययन

अरावली में अतिक्रमण, खनन और शहरी फैलाव से पर्यावरण को नुकसान

जनसत्ता ब्यूरो
नई दिल्ली, 14 जनवरी।

राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली से गुजरात तक फैली अरावली पर्वतमाला में अतिक्रमण, वनों की कटाई, अवैध खनन और शहरी बुनियादी ढांचे के विस्तार ने पर्यावरण का बहुत नुकसान पहुंचाया है। एक अध्ययन की रपट में भूजल पुनर्भरण, जैव विविधता, वायु गुणवत्ता व जलवायु संतुलन को लेकर गंभीर चेतावनी दी गई है।

रपट में कहा गया कि 1980 के दशक से पहले विशेषकर सरिस्का और बरदोद वन्यजीव अभयारण्यों के आसपास बड़े पैमाने पर वन भूमि में बदलाव के कारण प्राकृतिक वन आवरण में भारी गिरावट आई, जिससे महत्त्वपूर्ण वन्यजीव आवासों और जलग्रहण क्षेत्रों का विखंडन हुआ। 'अरावली परिदृश्य के पारिस्थितिक पुनर्स्थापन' पर यह शोध सांकला फाउंडेशन द्वारा भारत में डेनमार्क दूतावास और हरियाणा राज्य वन विभाग के सहयोग से किया गया था। इस अध्ययन में अरावली क्षेत्र में पारिस्थितिक गिरावट से निपटने के लिए एक एकीकृत दृष्टिकोण अपनाया गया, जिसमें पर्यावरणीय स्थिरता को जैव विविधता संरक्षण, जलवायु लचीलापन, आजीविका सुरक्षा और मानवाधिकारों से जोड़ा गया। अरावली पर्वतमाला, जो विश्व स्तर पर सबसे पुरानी पर्वत शृंखलाओं में से एक है, भारत के राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र (एनसीआर) और सिंधु-गंगा के मैदानों के लिए एक महत्त्वपूर्ण प्राकृतिक अवरोध और जीवन-निर्वाह में मदद करने वाला पारिस्थितिकी तंत्र है। केंद्रीय पर्यावरण मंत्री भूपेंद्र यादव द्वारा बुधवार को जारी की गई रपट में कहा गया है, 'हालांकि, चार राज्यों और 29 जिलों में फैला यह नाजुक पारिस्थितिकी तंत्र, जो पांच करोड़ से अधिक लोगों का घर है, वनों की कटाई, तेजी से शहरीकरण सहित अस्थिर भूमि उपयोग और भूमि क्षरण व मरुस्थलीकरण के कारण गंभीर खतरे में है।'

ध्ययन में कहा गया है, 'अतिक्रमण, वनों की कटाई, अवैध खनन और शहरी अवसंरचना के विस्तार ने इस नाजुक पारिस्थितिकी तंत्र में भूजल पुनर्भरण, जैव विविधता, वायु गुणवत्ता और जलवायु विनियमन को गंभीर रूप से प्रभावित किया है और अरावली की हरित अवरोध के रूप में कार्य करने की क्षमता को कमजोर कर दिया है, जिससे मरुस्थलीकरण में तेजी आई है और उत्तरी मैदानों की पारिस्थितिकी स्थिरता को खतरा पैदा हो गया है।'

हजारों हेक्टेयर भूमि पर पारिस्थितिकी को बहाल किया : भूपेंद्र यादव

केंद्रीय पर्यावरण मंत्री भूपेंद्र यादव ने कहा कि पिछले दो से तीन वर्षों में अरावली की हजारों हेक्टेयर भूमि पर पारिस्थितिकी को बहाल किया गया और सरकार इस कार्य को जारी रखने के लिए प्रतिबद्ध है। मंत्री ने यहां 'नेशनल कांफ्रेंस आन इको-रिस्टोरेशन आफ द अरावली लैंडस्केप : स्ट्रेंथनिंग द अरावली ग्रीन वाल' में अपने उद्घाटन भाषण के दौरान कहा कि सरकार अरावली पर्वतमाला और देशभर में इसी तरह के अन्य पारिस्थितिक तंत्रों के संरक्षण व उन्हें बहाल करने के लिए प्रतिबद्ध है।

अरावली पर्वतमाला → भारत की सबसे पुरानी पर्वत श्रृंखला

- **फैलाव** → गुजरात से दिल्ली तक
- **Threats** → Mining, Encroachment, Urbanisation
- **Role** → Desertification रोकना, Groundwater recharge
- **Region** → Delhi-NCR eco-shield

2025 में चीन के साथ भारत का व्यापार घाटा 116 .12 अरब डालर रहा

155.61 अरब डालर रहा दोनों देशों के बीच द्विपक्षीय कारोबार पिछले वर्ष

19.75 अरब डालर का निर्यात किया भारत ने चीन को 2025 के दौरान

135.87 अरब डालर का निर्यात किया चीन ने भारत को वर्ष 2025 में

99.21 अरब डालर का व्यापार घाटा रहा था भारत का चीन के साथ 2024 में

बीजिंग, प्रेट्र: कैलेंडर वर्ष 2025 के दौरान भारत और चीन के बीच द्विपक्षीय कारोबार 155.62 अरब डालर के रिकार्ड स्तर पर पहुंच गया है। चीन के सीमा शुल्क विभाग की ओर से बुधवार को जारी वार्षिक व्यापार डाटा के अनुसार, जनवरी-दिसंबर 2025 के दौरान भारत का चीन को निर्यात 9.7 प्रतिशत बढ़कर 19.75 अरब डालर रहा है। इससे पता चलता है कि चीन को निर्यात बढ़ाने के भारतीय प्रयासों को सफलता मिल रही है। हालांकि, इस दौरान चीन के साथ भारत का व्यापार घाटा बढ़कर रिकार्ड 116.12 अरब डालर पर पहुंच गया है।

डाटा के अनुसार, पिछले कैलेंडर वर्ष में चीन का भारत के लिए निर्यात 12.8 प्रतिशत बढ़ा है और यह 135.87 अरब डालर तक पहुंच गया है। भारत और चीन के बीच द्विपक्षीय कारोबार ऐसे समय में बढ़ा है जब दोनों देश अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप की ओर से लगाए गए अतिरिक्त टैरिफ का सामना कर रहे हैं। भारत-चीन के बीच व्यापार घाटा लगातार समस्या बनी हुई है। 2023 के बाद यह दूसरा मौका है, जब चीन के साथ भारत का व्यापार घाटा 100 अरब डालर के पार पहुंचा है। वर्ष 2024 में भारत का चीन के साथ व्यापार घाटा 99.21 अरब डालर था। तब चीन ने भारत को 113.45 अरब डालर का निर्यात किया था, जबकि भारत का चीन को निर्यात 14.25 अरब डालर पर स्थिर रहा था।

चीन का वार्षिक व्यापार डाटा जनवरी से दिसंबर तक का होता है, जबकि भारत अपने आंकड़े मार्च से अप्रैल के बीच जारी करता है। विश्लेषकों का कहना है कि भारतीय निर्यात में 5.5 अरब डालर की मामूली वृद्धि की है। हालांकि, यह काफी महत्वपूर्ण है। यह दर्शाता है कि तेल के भोजन, समुद्री उत्पादों, टेलीकाम उपकरणों और मसालों जैसे भारतीय सामानों ने कठिन चीनी बाजार में प्रवेश किया है। इसके अलावा भारत वर्षों से अपने मजबूत क्षेत्रों आइटी, फार्मा और कृषि उत्पाद के लिए चीन से बाजार खोलने की मांग कर रहा है।

1.2 ट्रिलियन डालर रहा चीन का व्यापार सरप्लस

चीन का वैश्विक व्यापार लगातार बढ़ रहा है, जो अमेरिका के साथ व्यापार तनावों के बावजूद जारी है। सीमा शुल्क विभाग के डाटा से पता चलता है कि 2025 में चीन का व्यापार सरप्लस 1.2 ट्रिलियन डालर के करीब रहा है और इसमें 2024 की तुलना में 20 प्रतिशत की वृद्धि रही है। 2025 में चीन ने 3 .77 ट्रिलियन डालर का निर्यात और 2 .58 ट्रिलियन डालर का आयात किया है।

आटो निर्यात 21 प्रतिशत बढ़ा

हांगकांग, एपी: कैलेंडर वर्ष 2025 के दौरान चीन का आटो निर्यात 21 प्रतिशत बढ़कर 70 लाख इकाई से ज्यादा रहा है। इसें इलेक्ट्रिक गाड़ियों की बढ़ती मांग का प्रमुख योगदान रहा है। उद्योग संगठन चाइना एसोसिएशन आफ आटोमोबाइल मैन्यूफैक्चरर्स के अनुसार, चीनी कार कंपनियों ने विदेशी बाजारों में विस्तार के चलते पिछले वर्ष इलेक्ट्रिक और प्लग-इन हाइब्रिड जैसी न्यू एनर्जी गाड़ियों का निर्यात पिछले साल के मुकाबले दोगुना होकर 26 लाख इकाई रही है।

भारत–चीन व्यापार घाटा **116 अरब डॉलर** पहुँचा

- चीन को भारत का निर्यात **9.7% बढ़ा**
- चीन से भारत का आयात **12.8% बढ़ा**
- कुल द्विपक्षीय व्यापार **155.62 अरब डॉलर**
- घाटा 100 अरब डॉलर पार दूसरी बार

निर्यात तैयारी में महाराष्ट्र शीर्ष पर, उप्र चौथे स्थान पर

निर्यात तैयारी को लेकर नीति आयोग ने जारी की राज्यों की रैंकिंग, देश के शीर्ष-10 जिलों में गौतम बुद्ध नगर भी शामिल

जागरण ब्यूरो, नई दिल्ली: विकसित देश बनने के लिए भारत वैश्विक व्यापार में अपनी हिस्सेदारी बढ़ाने के लिए प्रयासरत हो गया है। इस दिशा में सभी राज्यों से निर्यात के लिए इकोसिस्टम तैयार करने एवं उसके अनुकूल नीति बनाने के लिए कहा गया है। नीति आयोग की तरफ से राज्यों की इस तैयारी पर बुधवार को एक रिपोर्ट जारी की गई। रिपोर्ट के मुताबिक, निर्यात तैयारी में महाराष्ट्र अव्वल है। तमिलनाडु दूसरे तो गुजरात तीसरे स्थान पर है, वहीं उत्तर प्रदेश चौथे तो बिहार 16वें स्थान पर है। इन्फ्रास्ट्रक्चर व अन्य इकोसिस्टम, निर्यात के लिए विशेष सेक्टर का चयन, प्रतिस्पर्धा क्षमता और बाजार के विकास के आधार पर निर्यात तैयारी की रैंकिंग की गई है। पंजाब सातवें नंबर पर रहा है।

वर्तमान में वैश्विक कारोबार में भारत की हिस्सेदारी लगभग दो प्रतिशत है जिसे वर्ष 2047 तक 10 प्रतिशत करने और वर्ष 2030 तक भारत के निर्यात को एक लाख करोड़ डालर तक ले जाने का लक्ष्य तय किया गया है। चालू वित्त वर्ष 2025-26 में वस्तु व सेवा को मिलाकर भारत का कुल निर्यात 850 अरब डालर से अधिक रहने का अनुमान है। अमेरिका के साथ व्यापार समझौते में हो रही देरी से भारतीय निर्यात प्रभावित होने की आशंका है। हालांकि, इस कमी की भरपाई के लिए सरकार यूरोपीय यूनियन समेत कई अन्य देशों से मुक्त व्यापार समझौता कर रही है। पिछले साल ब्रिटेन, ओमान, न्यूजीलैंड जैसे देशों के साथ व्यापार समझौते किए गए हैं। इन पर अप्रैल 2026 के बाद अमल शुरू हो सकता है।

नीति आयोग की रिपोर्ट के मुताबिक, वर्तमान में निर्यात कारोबार देश के चंद राज्यों में ही सिमटा हुआ है। महाराष्ट्र, तमिलनाडु व गुजरात जैसे सिर्फ तीन राज्य कुल का 56 प्रतिशत निर्यात करते हैं। देश में 680 जिले हैं और निर्यात में 100 जिलों की हिस्सेदारी 88 प्रतिशत है। बाकी के 580 जिलों की निर्यात में सिर्फ 12 प्रतिशत की हिस्सेदारी है। देश के सिर्फ 10 जिलों से कुल 38 प्रतिशत निर्यात होता है। उत्तर प्रदेश के गौतम बुद्ध नगर को छोड़कर अन्य सभी नौ जिले गुजरात, महाराष्ट्र और तमिलनाडु से हैं। नीति आयोग का मानना है कि निर्यात को लेकर जो असमानता है, उसे दूर करने की जरूरत है और यह राज्य की तैयारी पर निर्भर करता है। इसलिए सभी राज्यों को निर्यात तैयारी के लिए प्रेरित किया जा रहा है।

नई दिल्ली में बुधवार को निर्यात तैयारी सूचकांक जारी करते नीति आयोग के सीईओ बीवीआर सुब्रमण्यम (मध्य) व अन्य ● सौ. एक्स@नीतिआयोग

- वर्ष 2047 तक वैश्विक कारोबार में भारत की हिस्सेदारी 10 प्रतिशत करने का लक्ष्य
- 2030 तक भारत के निर्यात को एक लाख करोड़ डालर तक ले जाने की तैयारी

छोटे राज्यों में उत्तराखंड शीर्ष पर

छोटे राज्यों की बात करें तो निर्यात तैयारी में उत्तराखंड शीर्ष पर रहा है। इसके बाद जम्मू और कश्मीर, नगालैंड, दादरा एवं नागर हवेली, दमन व दीव, गोवा और त्रिपुरा का स्थान है। निर्यात आर्थिक विकास का एक मुख्य चालक है और देशों को ग्लोबल वैल्यू चेन में अपनी स्थिति मजबूत करने, विदेशी मुद्रा कमाने और वैश्विक प्रतिस्पर्धा बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

मजबूत घरेलू बुनियाद का बढ़ रहा महत्व

प्रेट्र के अनुसार, रिपोर्ट जारी करते हुए नीति आयोग के सीईओ बीवीआर सुब्रमण्यम ने कहा कि जैसे-जैसे भारत मुक्त व्यापार समझौते (एफटीए) और इकोनमिक पार्टनरशिप का अपना नेटवर्क बढ़ा रहा है, मजबूत घरेलू बुनियाद का महत्व और भी बढ़ रहा है। उन्होंने कहा कि इस रैंकिंग का राज्यों के लिए यह मतलब है कि वे ऐसे इकोसिस्टम को बढ़ावा दें, जो नए अवसरों पर प्रतिक्रिया दे सकें, वैश्विक मानकों के साथ तालमेल बिठा सकें और जिलों में प्रतिस्पर्धा बढ़ा सकें। हाल के वर्षों में कई राज्यों ने पहले ही समर्पित नीतियों, संस्थानों और इन्फ्रास्ट्रक्चर के जरिए अपने निर्यात विजन को मजबूत करना शुरू कर दिया है।

Preparedness Index (EPI)

- **Index जारी करने वाला → नीति आयोग (NITI Aayog)**
- **Index नाम → Export Preparedness Index (EPI)**
- **रैंक 1 → महाराष्ट्र**
- **रैंक 2 → तमिलनाडु**
- **रैंक 3 → गुजरात**
- **रैंक 4 → उत्तर प्रदेश**
- **Top-10 जिलों में शामिल → गौतम बुद्ध नगर (UP)**
- **Small States में रैंक 1 → उत्तराखंड**
- **EPI उद्देश्य** → राज्यों की निर्यात क्षमता मापना
- **मुख्य स्तंभ (Pillars)** → Policy, Infrastructure, Ecosystem, Business Environment
- **लक्ष्य 2030** → भारत का निर्यात **1 ट्रिलियन डॉलर**
- **लक्ष्य 2047** → वैश्विक व्यापार में **10% हिस्सेदारी**
- **नीति संदर्भ → Foreign Trade Policy, PLI Scheme**

सेना दिवस पर पहली बार दिखेगी भैरव बटालियन

- आज जयपुर में आयोजन, मिसाइल से लेकर ड्रोन तक आएंगे नजर
- सेना दिवस परेड पहली बार छावनी क्षेत्र के बाहर आयोजित होगी

भैरव बटालियन के जवान चार जनवरी को प्रशिक्षण अभियान में शिरकत करते हुए। फाइल >>

नई दिल्ली, एएनआइ : भारतीय सेना दिवस परेड गुरुवार को जयपुर में आयोजित होगी। पहला मौका होगा, जब यह छावनी क्षेत्र के बाहर आयोजित की जाएगी। परेड में सेना की तोपखाने और राकेट क्षमताओं का भी प्रदर्शन किया जाएगा, जिसमें कई मिसाइल और लांचर प्रणालियों को दिखाया जाएगा। यह परेड भैरव बटालियन की पहली सार्वजनिक उपस्थिति को भी चिह्नित करेगी। भैरव बटालियन का गठन आधुनिक युद्ध की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए किया गया है, ताकि दुश्मनों के खतरों के खिलाफ त्वरित और सटीक आक्रामक समाधान प्रदान किया जा सके। यह विभिन्न भौगोलिक क्षेत्रों में तेजी से प्रतिक्रिया देने में सक्षम है। रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह, मिजोरम के राज्यपाल जनरल वीके सिंह, राजस्थान के राज्यपाल हरिभाऊ बागड़े एवं मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा, सेनाध्यक्ष जनरल उपेंद्र द्विवेदी सहित सेना के वरिष्ठ अधिकारी परेड के साक्षी बनेंगे।

परेड में सेना की तोपखाने और राकेट क्षमताओं का प्रदर्शन किया जाएगा। ब्रह्मोस क्रूज मिसाइल और पिनाका मल्टी-बैरल राकेट लांचर भी प्रदर्शित किए जाएंगे। अन्य प्रणालियों में उन्नत बीएम-21 ग्रेड मल्टी-बैरल राकेट लांचर और स्मर्श प्रणाली शामिल होंगी, जो 300 मिमी कैलिबर के 12 राकेटों को 90 किलोमीटर तक की रेंज में फायर कर सकती है। उन्नत टोइड आर्टिलरी गन सिस्टम और एम777 अल्ट्रा-लाइट हावित्जर भी प्रदर्शन का हिस्सा होंगे।

एयर डिफेंस क्षमताओं में स्वदेशी आकाशतीर प्रणाली शामिल होगी, जिन्होंने आपरेशन सिंदूर के दौरान उच्च-खतरे वाले वातावरण में पाकिस्तान द्वारा संचालित विभिन्न तुर्किये और चीनी मूल के ड्रोन सिस्टम को गिराकर प्रभावशीलता साबित की। इग्ला मैन-पोर्टेबल एयर डिफेंस सिस्टम भी प्रदर्शनी का हिस्सा होंगे। परेड के दौरान यूनिवर्सल राकेट लांचर सिस्टम प्रदर्शित होगा, जिसे सूर्यास्त्र के नाम से भी जाना जाता है।

इस वर्ष की सेना परेड यह भी दिखाएगी कि सेना युद्ध के मैदान में मानव और तकनीक को कैसे एकीकृत कर रही है। सैनिकों को मानवरहित जमीनी वाहनों (यूजीवी) और ड्रोन के साथ टोही, सटीक हमले और रसद सहायता जैसी भूमिकाओं के लिए देखा जाएगा। कई कामिकेज ड्रोन भी प्रदर्शित किए जाएंगे, जिनमें मिनी हार्पी, हारोप, पीसकीपर और स्काई स्ट्राइकर शामिल हैं। त्रिनेत्र लाइटरिंग म्यूनिशन सिस्टम भी प्रदर्शनी में शामिल होगा।

Operation Pawan → श्रीलंका में भारतीय सैन्य अभियान
- **समयावधि → 1987–1990**
- **संदर्भ → India–Sri Lanka Accord, 1987**
- **बल का नाम → IPKF (Indian Peace Keeping Force)**
- **तैनाती संख्या** → लगभग **1,200 सैनिक प्रारंभिक चरण में**
- **उद्देश्य** → LTTE निरस्त्रीकरण, शांति स्थापना
- **क्षेत्र → जाफना, उत्तरी श्रीलंका**
- **कमांड** → भारतीय सेना के अधीन
- **वापसी → मार्च 1990**
- **राजनीतिक निर्णय → वी.पी. सिंह सरकार** द्वारा
- **शहीद संख्या** → 1,000+ (लगभग)
- **सेना दिवस → 15 जनवरी**
- **वर्तमान रक्षा मंत्री (समाचार संदर्भ) → राजनाथ सिंह**
- **IPKF** → भारत का पहला बड़ा विदेशी शांति मिशन (combat role)
- **1987 Accord हस्ताक्षरकर्ता** → राजीव गांधी – जे.आर. जयवर्धने
- **Operation Pawan नाम** → श्रीलंका अभियान का सैन्य कोड
- **Operation Blue Star** → 1984, स्वर्ण मंदिर
- **Operation Cactus** → 1988, मालदीव
- **UN Peacekeeping ≠ IPKF** (IPKF UN के अधीन नहीं था)
- **Chief of Defence Staff (CDS)** → एकीकृत सैन्य प्रमुख

'आपरेशन पवन' के दौरान भारतीय सैनिकों के बलिदान को सम्मान मिलना चाहिए : राजनाथ

नई दिल्ली में बुधवार को सशस्त्र बल पूर्व सैनिक दिवस कार्यक्रम के दौरान पुस्तिका का विमोचन करते (बाएं से) वायुसेना प्रमुख एयर चीफ मार्शल एपी सिंह, सीडीएस जनरल अनिल चौहान, रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह और नौसेना प्रमुख दिनेश के त्रिपाठी। एएनआइ

1987 से 1990 के बीच श्रीलंका में भारतीय शांति सेना की गई थी तैनात, करीब 1200 सैनिक बलिदान हुए थे

- रक्षा मंत्री बोले- इस अभियान में शामिल भारतीय सैनिकों के योगदान को स्वीकार कर रही है मोदी सरकार

नई दिल्ली, प्रेट्र: रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने बुधवार को कहा कि लगभग चार दशक पहले श्रीलंका में 'आपरेशन पवन' के दौरान भारतीय सैनिकों द्वारा दिए गए बलिदान को उचित सम्मान मिलना चाहिए। उन्होंने 1990 के दशक की सरकारों पर परोक्ष रूप से निशाना साधते हुए कहा कि उस समय सैनिकों के योगदान को सार्वजनिक रूप से पर्याप्त मान्यता नहीं दी गई। सिंह ने कहा कि मोदी सरकार न केवल खुले दिल से इस अभियान में शामिल भारतीय सैनिकों के योगदान को स्वीकार कर रही है, बल्कि हर स्तर पर उनके योगदान को मान्यता देने की प्रक्रिया में भी है।

सशस्त्र बल पूर्व सैनिक दिवस के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम में रक्षा मंत्री ने कहा- 'आज जब पूरा देश अपने सैनिकों को याद कर रहा है और उनके योगदान के प्रति कृतज्ञता व्यक्त कर रहा है, तब मैं उन सभी पूर्व सैनिकों को भी याद करना चाहता हूं जिन्होंने लगभग 40 साल पहले श्रीलंका में आइपीकेएफ (भारतीय शांति सेना) के तहत शांति स्थापना अभियान में हिस्सा लिया था। भारतीय सेनाओं ने असाधारण साहस और पराक्रम का प्रदर्शन किया।' उन्होंने कहा- ' मेरा मानना है कि आपरेशन पवन में शामिल हमारे आइपीकेएफ सैनिकों द्वारा किए गए बलिदानों का सम्मान किया जाना चाहिए।'

भारत ने जुलाई 1987 से मार्च 1990 के बीच श्रीलंका में भारतीय शांति सेना की तैनाती के दौरान करीब 1,200 सैनिकों को खोया था। भारत और श्रीलंका ने 29 जुलाई 1987 को एक ऐतिहासिक शांति समझौते पर हस्ताक्षर किए थे, जिसके बाद तमिल-बहुल इलाकों में वर्षों से जारी हिंसा और संघर्ष को समाप्त करने के उद्देश्य से भारत ने आइपीकेएफ को द्वीप राष्ट्र में तैनात किया था। हालांकि, शांति स्थापित नहीं हो सकी और अंततः आइपीकेएफ को वापस बुला लिया गया था। शांति सेना को श्रीलंका भेजने का फैसला राजीव गांधी सरकार के दौरान लिया गया था, जबकि वीपी सिंह सरकार के कार्यकाल में सेना को वापस बुलाया गया।

आपरेशन सिंदूर भारत के संकल्प और संयम का प्रतीक : सेना प्रमुख

सेना प्रमुख जनरल उपेंद्र द्विवेदी ने बुधवार को कहा कि आपरेशन सिंदूर भारत के संकल्प और संयम का निर्णायक प्रदर्शन था, जिसने देश की सेना और युवाओं की नैतिक ताकत तथा पेशेवर योग्यता को दर्शाया। भारतीय सशस्त्र बलों ने पिछले साल अप्रैल में पहलगाम में हुए आतंकी हमले के जवाब में छह-सात मई की रात को आपरेशन सिंदूर शुरू किया था, जिसमें कम से कम 100 आतंकियों को मार गिराया गया। जनरल द्विवेदी ने एनसीसी के गणतंत्र दिवस शिविर में कैडेटों को संबोधित करते हुए कहा- आपरेशन सिंदूर ने हमारे सशस्त्र बलों और युवाओं की नैतिक ताकत को दर्शाया। उन्होंने पाकिस्तान को चेतावनी देते हुए कहा कि आपरेशन सिंदूर अभी जारी है और दुश्मन के किसी भी दुस्साहस का कड़ा जवाब दिया जाएगा। उन्होंने एनसीसी के 75,000 से अधिक कैडेटों की नागरिक रक्षा, अस्पताल प्रबंधन, आपदा राहत और सामुदायिक सेवा में योगदान की सराहना की।

भैरव बटालियन → भारतीय सेना की **नई तकनीक-आधारित इकाई**
- **पहली सार्वजनिक उपस्थिति → सेना दिवस परेड, जयपुर**
- **सेना दिवस → 15 जनवरी**
- **परेड स्थल (2025) → जयपुर, राजस्थान**
- **थीम** → आधुनिक युद्ध + हाई-टेक क्षमताएँ
- **विशेषता → ड्रोन, रोबोटिक्स, AI सिस्टम का उपयोग**
- **मिसाइल + रॉकेट सिस्टम** → परेड में प्रदर्शन
- **लॉइटरिंग म्यूनिशन** → सटीक हमला करने वाला ड्रोन हथियार
- **स्वदेशी फोकस** → मेक इन इंडिया, आत्मनिर्भर रक्षा
- **कॉम्बैट रोबोट्स** → उच्च जोखिम क्षेत्रों में तैनाती
- **नेटवर्क-सेंट्रिक वारफेयर** → रियल-टाइम डेटा शेयरिंग
- **UAV/UGV** → Unmanned Aerial & Ground Vehicles
- **भूमिका** → त्वरित प्रतिक्रिया + सीमावर्ती सुरक्षा
- **रणनीतिक संकेत** → टेक्नोलॉजी-ड्रिवन इंडियन आर्मी

Index Name → **Henley Passport Index**
- **Year** → 2026 Ranking
- **India Rank → 80th (5 स्थान ऊपर)**
- **Visa-free / VOA Access → 55 देशों में**
- **Top Rank → Singapore (192 destinations)**
- **2nd Rank → Japan + South Korea**
- **Europe Dominance** → Top 10 में अधिकांश यूरोपीय देश
- **Weakest Passport → Afghanistan**
- **Index Basis** → IATA travel data
- **Coverage** → 199 passports, 227 destinations
- **India Strength** → SE Asia, Africa, Caribbean access
- **India Limitation** → Europe, US, UK में वीज़ा अनिवार्य

विश्व रैंकिंग में पांच पायदान ऊपर चढ़ा भारतीय पासपोर्ट

नई दिल्ली, आइएएनएस : हेनली पासपोर्ट इंडेक्स ने वर्ष 2026 के लिए वैश्विक पासपोर्ट रैंकिंग जारी की है। इसमें भारतीय पासपोर्ट की रैंकिंग में पांच अंकों का सुधार हुआ है। अब 55 गंतव्यों के लिए वीजा-मुक्त और वीजा-आन-अराइवल सुविधा उपलब्ध होगी। इस इंडेक्स में भारत को 80वां स्थान मिला है, जो अल्जीरिया और नाइजर के साथ साझा किया गया है।

सिंगापुर सूची में शीर्ष पर है। उसका पासपोर्ट 192 देशों के लिए वीजा-मुक्त सुविधा प्रदान करता है। जापान और दक्षिण कोरिया दूसरे स्थान पर हैं, जो यात्रा की स्वतंत्रता और देश की आर्थिक शक्ति के बीच संबंध को उजागर करते हैं। भारतीय यात्री दक्षिण-पूर्व एशिया, अफ्रीका, कैरेबियाई और द्वीपीय देशों के कुछ हिस्सों में वीजा-मुक्त यात्रा का आनंद लेते हैं। हालांकि, यूरोप, ब्रिटेन, अमेरिका, कनाडा और पूर्वी एशिया के बड़े हिस्से के लिए अब भी अग्रिम वीजा की आवश्यकता है। शीर्ष 10 स्थानों पर यूरोपीय पासपोर्टों का दबदबा रहा, जिनमें से प्रत्येक 180 से अधिक देशों के लिए सुविधा प्रदान करता है। अफगानिस्तान का पासपोर्ट सबसे कमजोर बना हुआ है। अमेरिका इस सूचकांक में शीर्ष 10 में वापस आ गया है।

भारतीय सेना की मेजर स्वाति को संयुक्त राष्ट्र वैश्विक सम्मान

संयुक्त राष्ट्र, 14 जनवरी (भाषा)।

दक्षिण सूडान में तैनात एक भारतीय महिला शांति सैनिक को लैंगिक समावेशन पर आधारित एक परियोजना के लिए संयुक्त राष्ट्र का पुरस्कार प्रदान किया गया है। संयुक्त राष्ट्र दक्षिण सूडान मिशन (यूएनएमआइएसएस) में सेवारत 31 वर्षीय मेजर स्वाति शांति कुमार को उनकी परियोजना 'इक्वल पार्टनर्स, लास्टिंग पीस' में लैंगिक समावेशी दृष्टिकोण के लिए संयुक्त राष्ट्र महासचिव पुरस्कार से सम्मानित किया गया है।

भारतीय सेना की **मेजर स्वाति शांति कुमार** सम्मानित
- तैनाती – **UNMISS (दक्षिण सूडान)**
- परियोजना – **Gender Inclusion आधारित**
- पुरस्कार – **UN Secretary-General**

Award
- थीम – *Equal Partners, Lasting Peace*

विश्व पुस्तक मेला

कैलाश सत्यार्थी ने युवाओं से चर्चा में सफलता का दिया थ्रीडी मंत्र

पोलैंड के राजदूत ने भारत-पोलैंड की साहित्यिक परंपराओं की ताकत पर की बात, हाल नंबर पांच में विभिन्न पुस्तकों के विमोचन के साथ वक्ताओं ने की चर्चा

संजीव गुप्ता • जागरण

नई दिल्ली: भारतीय सेना के युद्ध वाहन के पास खड़ा एक सशस्त्र स्नाइपर मुस्कुराता है। लोगों, विशेषकर बच्चों के सवालों के जवाब देता है, उन्हें अपने साथ यादगार सेल्फी लेने देता है। बंदूकों की कार्यप्रणाली को समझाता है, लेकिन दर्शकों को इनमें से किसी भी राइफल को छूने से सख्ती से मना करता है। भारत मंडपम में चल रहे 53वें विश्व पुस्तक मेले की ऐसी ही वास्तविकता देखने को मिल रही है।

एनबीटी) द्वारा आयोजित विश्व पुस्तक मेले का थीम "भारतीय सैन्य इतिहासः शौर्य और ज्ञान @ 75" रखा गया है, जिसका उद्देश्य जेन-जी में देशभक्ति की भावना को जगाना है। मेले के पांचवें दिन का शुभारंभ अंतरराष्ट्रीय फोकस के साथ हुआ। विदेशी मंडप में साहित्य, कूटनीति व पुस्तकों के भविष्य पर कई सत्र हुए। एक अन्य आकर्षण पोलैंड के राजदूत एचई पियोटर स्विटाल्स्की के साथ 'बुक्स एंड लिटरेचर पर एक संवाद' था। राजदूत ने कहा कि भारत की तरह ही पोलैंड को भी विभाजन का दंश झेलना पड़ा है। यह दोनों देशों की साहित्यिक परंपराओं की ताकत थी कि उन्होंने अपनी धर्मनिरपेक्ष पहचान को जीवित रखा। वहीं नोबेल शांति पुरस्कार विजेता कैलाश सत्यार्थी ने करुणा की शक्ति पर बात करते हुए अपनी आगामी पुस्तक करुणाः द पावर आफ कम्पेशन और उनकी हाल ही में प्रकाशित आत्मकथा पर बात की। उन्होंने आधुनिक संबंधों की नजाकत, सहानुभूति, जिम्मेदारी और सम्मान की तत्काल आवश्यकता के बारे में बात की। जीवन के लिए अपने प्रेरणादायक थ्रीडी मंत्र सुझाया, जिसमें उन्होंने युवाओं का आह्वान किया कि वे बड़े सपना देखिए, उसे पाने के लिए क्षमता को पहचानिए और आज का काम आज करिये। उन्होंने युवाओं से करुणा को उद्देश्यपूर्ण कार्रवाई में बदलने का आग्रह किया।

विश्व पुस्तक मेले में अपनी आगामी पुस्तक करुणा : द पावर आफ कम्पेशन और हाल ही में प्रकाशित अपनी आत्मकथा पर बात करते नोबल पुरस्कार विजेता कैलाश सत्यार्थी। जागरण

पुस्तक विमोचन और चर्चा

प्रभात प्रकाशन के स्टाल पर लेखक सचिन जैन की नई पुस्तक भारत में सामाजिक नागरिक पहल का ऐतिहासिक सफरनामा का विमोचन हुआ। संपादक पूजा सिंह, लेखक सचिन जैन, निदेशक प्रभात कुमार और पीयूष कुमार उपस्थित रहे। सत्यार्थी की बेस्टसेलर पुस्तकों-सपनों की उड़ान, आजाद बचपन की ओर, बदलाव के बोल, सभ्यता का संकट और समाधान पर भी चर्चा हुई।

साहित्यिक उत्सव और सांस्कृतिक मंच भी आए साथ : मेले में देश के प्रतिष्ठित साहित्यिक उत्सव और सांस्कृतिक मंच एक साथ आ गए हैं। पुरी लिटरेचर फेस्टिवल (पीएलएफ) ने देश के इतिहास, स्मृति, आस्था व समकालीन जीवन से जुड़े विषयों पर कई सत्र आयोजित किए गए। 'रेल्स, रिपब्लिक, एंड दि लाइव्स वी इनहेरिट' शीर्षक सत्र में रेलवे को देश के एक जीवंत अभिलेख के रूप में प्रस्तुत किया गया।

कैलाश सत्यार्थी → नोबेल शांति पुरस्कार विजेता (2014)
- **पुरस्कार साझा → मलाला यूसुफजई** के साथ
- **क्षेत्र** → बाल श्रम उन्मूलन, बाल अधिकार
- **कार्यक्रम → विश्व पुस्तक मेला (World Book Fair)**
- **स्थान → नई दिल्ली**
- **आयोजनकर्ता → National Book Trust (NBT)**
- **थीम संदर्भ** → युवा, साहित्य, सामाजिक परिवर्तन
- **मुख्य संदेश → साहस, नैतिकता, करुणा = सफलता का सूत्र**
- **चर्चा का विषय** → सामाजिक जिम्मेदारी, नेतृत्व, मूल्य
- **भूमिका** → मानवाधिकार कार्यकर्ता

Bachpan Bachao Andolan → कैलाश सत्यार्थी द्वारा स्थापित
नोबेल शांति पुरस्कार → 1901 से, ओस्लो में दिया जाता है
भारत के नोबेल शांति विजेता → मदर टेरेसा (1979), कैलाश सत्यार्थी (2014)
World Book Fair India → वार्षिक साहित्यिक आयोजन
NBT → भारत सरकार का स्वायत्त निकाय (शिक्षा मंत्रालय)
साहित्यिक महोत्सव → Soft Power diplomacy का माध्यम

आपसी विश्वास बढ़ाने के लिए भारत और चीन संपर्क बढ़ाने पर सहमत

- शासन और संगठन के पदाधिकारियों के बीच हुई संबंधों के विकास पर चर्चा
- चीनी कम्युनिस्ट पार्टी के प्रतिनिधियों ने किया था भाजपा,संघ दफ्तरों का दौरा

नई दिल्ली, एएनआइ : चीन के साथ द्विपक्षीय मसलों पर वार्ता के लिए बुधवार को विदेश सचिव विक्रम मिसरी ने चीन की कम्युनिस्ट पार्टी के अंतरराष्ट्रीय मामलों के उप मंत्री सुन हैयान से वार्ता की। एक दलीय शासन व्यवस्था वाले चीन में कम्युनिस्ट पार्टी के पदाधिकारियों का सरकार में सीधा दखल है।

विदेश मंत्रालय ने एक्स पर मुलाकात से संबंधित बातों को साझा करते हुए बताया है कि दोनों पक्षों ने संबंधों को सकारात्मक दिशा में आगे बढ़ाने के लिए स्थितियों की समीक्षा की। दोनों पक्षों ने दोनों देशों के नागरिकों के बीच संपर्क बढ़ाने के तरीकों पर वार्ता की। साथ ही संवेदनशील मसलों से जुड़ी बातों पर विचारों का आदान-प्रदान किया। इन मसलों में सीमा से जुड़ा मसला प्रमुख था। भारत ने सीमा पर शांति बनाए रखने और स्थिति में एकतरफा बदलाव न होने पर जोर दिया।

इससे पहले मंगलवार को चीन की कम्युनिस्ट पार्टी के नेताओं ने राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सरकार्यवाह दत्तात्रेय होसबाले से दिल्ली स्थित संघ के मुख्यालय में मुलाकात की थी। लगभग आधा घंटे की मुलाकात में कई विषयों पर औपचारिक बातचीत हुई। यह मुलाकात चीनी नेताओं की इच्छा पर हुई। कम्युनिस्ट पार्टी के नेताओं ने दिल्ली में भाजपा मुख्यालय जाकर वहां संगठन के महासचिव अरुण सिंह, पार्टी के विदेश मामलों के संयोजक विजय चौथाईवाले और अन्य पदाधिकारियों से भी मुलाकात की। यहां भी द्विपक्षीय संवाद बढ़ाने और संबंधों को मधुर बनाने पर बात हुई। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ और भाजपा मुख्यालयों में हुई वार्ता में किसी नीतिगत मसले पर चर्चा नहीं हुई। इनमें दोनों देशों के संबंधों को बेहतर बनाने पर जोर दिया गया।

इससे पहले अगस्त 2025 में तियानजिन में शंघाई सहयोग संगठन समिट के दौरान प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने चीनी कम्युनिस्ट पार्टी के सचिव चाई की से मुलाकात कर दोनों देशों के संबंधों को मजबूत बनाने के तरीकों पर चर्चा की थी। इस दौरान द्विपक्षीय राजनीतिक संबंधों को बढ़ाने पर जोर दिया गया था। बाद में राष्ट्रपति शी चिनफिंग से वार्ता में मोदी ने आपसी विश्वास, सम्मान और संवेदनशीलता बढ़ाए जाने पर भी जोर दिया था।

आगे बढ़ेंगे संबंध। प्रतीकात्मक

छठे खिताब की तलाश में भारत की युवा टीम

5 बार अंडर-19 विश्व कप में खिताब जीत चुकी है भारतीय टीम, ट्राफी जीतने के मामले में शीर्ष पर

2000 में श्रीलंका को हराकर पहली बार खिताब पर कब्जा जमाया था भारत ने अंडर-19 विश्व कप में

1988 में खेला गया था पहला अंडर-19 विश्व कप मुकाबला, आस्ट्रेलिया ने खिताब पर जमाया था कब्जा

ग्रुप-ए: भारत, बांग्लादेश, न्यूजीलैंड, अमेरिका | ग्रुप-बी: इंग्लैंड, पाकिस्तान, स्काटलैंड, जिंबाब्वे | ग्रुप-सी: आस्ट्रेलिया, आयरलैंड, जापान, श्रीलंका | ग्रुप-डी: अफगानिस्तान, दक्षिण अफ्रीका, वेस्टइंडीज, तंजानिया

जागरण न्यूज नेटवर्क, नई दिल्ली: पुरुष टी-20 विश्व कप से पहले अंडर-19 वनडे विश्व कप का रोमांच गुरुवार से शुरू होने जा रहा है। क्रिकेट के महाकुंभ में युवा सितारों से सजी भारतीय टीम अंडर-19 विश्व कप में छठा खिताब जीतने के इरादे से उतरेगी। भारतीय टीम टूर्नामेंट में अमेरिका के विरुद्ध बड़ी जीत दर्ज करके अपने अभियान की शानदार शुरुआत करना चाहेगी। भारतीय टीम कागजों पर संतुलित और मजबूत दिखती है। पिछले 16 मैचों में 13 में जीत हासिल करके टीम ने साबित कर दिया है कि वह जीतना जानती है।

आयुष म्हात्रे | वैभव सूर्यवंशी

अमेरिका के विरुद्ध अभियान शुरू करेगी भारतीय अंडर-19 टीम, वैभव पर रहेंगी नजरें

एक टूर्नामेंट में सबसे ज्यादा रन बनाने वाले खिलाड़ी

रन	खिलाड़ी	देश	साल
506	डेवाल्ड ब्रेविस	दक्षिण अफ्रीका	2022
505	शिखर धवन	भारत	2004
471	ब्रेट विलियम्स	आस्ट्रेलिया	1988
423	कैमरन व्हाइट	आस्ट्रेलिया	2002
421	डोनोवन पैगन	वेस्टइंडीज	2002

2026 अंडर-19 विश्व कप के लीग में भारत के मुकाबले

तिथि	बनाम	स्थान
15 जनवरी	अमेरिका	बुलावायो
17 जनवरी	बांग्लादेश	बुलावायो
24 जनवरी	न्यूजीलैंड	बुलावायो

अब तक के विजेता

टीमें	खिताब
भारत	2000, 2008, 2012, 2018, 2022
आस्ट्रेलिया	1988, 2002, 2010, 2024
पाकिस्तान	2004, 2006
बांग्लादेश	2020
द. अफ्रीका	2014
वेस्टइंडीज	2016
इंग्लैंड	1998

आज का मैच
भारत vs अमेरिका
दोपहर 1:00 बजे | स्थान : बुलावायो
स्टार स्पोर्ट्स नेटवर्क/जियो हाटस्टार

स्वाभिमान

राष्ट्रपति भवन को मिली अंग्रेजी हुकूमत के दौर की तस्वीरों से मुक्ति

स्वाधीनता पूर्व से हाल तक लगी चली आ रही ब्रिटिशकालीन अधिकारियों की 90 से अधिक तस्वीरें हटाई गईं

- स्टेट कारिडोर में अब राष्ट्रनायकों का सम्मान
- परमवीर चक्र प्राप्त 21 सैनिकों की तस्वीरें लगाई गई
- राष्ट्रनायकों के तैलचित्र नौ कलाकारों ने किए तैयार

नेमिष हेमंत • जागरण

नई दिल्ली : गुलामी के अवशेषों से जब देश मुक्ति पा रहा हो, तो भला राष्ट्राध्यक्ष का आवास 'राष्ट्रपति भवन' कैसे अछूता रहे। यह भी औपनिवेशिक चिह्नों से मुक्ति पाते हुए राष्ट्रनायकों को नमन कर रहा है। राष्ट्रपति भवन, स्वाधीनता पूर्व ब्रिटिश शासन में वायसराय हाउस था। तब से यहां स्टेट गलियारे में 90 से अधिक ब्रिटिश अधिकारियों की तस्वीरें लगी थीं। अब इन तस्वीरों को हटा दिया गया है।

गुलामी की मानसिकता को दर्शातीं इन तस्वीरों को राष्ट्र के स्वाधीन होने के साथ अप्रासंगिक होने के बाद भी हाल तक बरकरार रखा गया था। जब प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने भारतीय मानस से औपनिवेशिक अवशेषों से मुक्ति का आह्वान किया, तब ध्यान उस ओर गया। अब उन तस्वीरों को हटाकर, वहां राष्ट्रनायक सर्वोच्च सैन्य सम्मान परमवीर चक्र से विभूषित 21 विजेताओं की भव्य तस्वीरें लगाई गई हैं, जो स्टेट गलियारे से गुजरते हुए लोगों को गर्व से भर रही हैं। साथ ही वहां से गुजर रहे लोगों को चित्रों को देखकर राष्ट्रनायकों के शौर्य को जानने की इच्छा के मद्देनजर हर तस्वीर के नीचे क्यूआर कोड स्थापित किया गया है। इसके पूर्व गुलामी के चिह्नों से मुक्ति पाने के क्रम में राष्ट्रपति भवन स्थित मुगल गार्डन का नाम बदलकर अमृत उद्यान कर दिया गया था। राष्ट्रनायकों के तैलचित्र को इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र (आइजीएनसीए) की देखरेख में नौ कलाकारों ने तैयार किया है।

आइजीएनसीए के एक अधिकारी ने बताया कि राष्ट्रपति भवन और उसके संग्रहालय परिसरों में औपनिवेशिक सत्ता के प्रतीक हटाए जा रहे हैं। उस स्थान पर देश की अपनी वीरता, बलिदान और स्वाभिमान की गाथाएं प्रतिष्ठित की जा रही हैं। उस कड़ी में सर्वोच्च सैन्य सम्मान-परमवीर चक्र से सम्मानित वीरों को समर्पित एक विशेष दीर्घा की कल्पना की गई थी, जिसका दायित्व आइजीएनसीए को मिला। उसके लिए ऐतिहासिक समझ वाले उत्कृष्ट कलाकारों को प्रारंभिक रेखाचित्र के साथ आमंत्रित किया गया।

राष्ट्रपति भवन के स्टेट गलियारे में कुछ इस तरह लगी हैं सर्वोच्च सैन्य सम्मान परमवीर चक्र से सम्मानित सैनिकों की तस्वीरें। फोटो : आइजीएनसीए

अब तक 21 सैनिकों को मिला देश का सर्वोच्च सम्मान

वर्ष 1947 से अब तक 21 सैनिको को ही देश का सर्वोच्च सैन्य सम्मान परमवीर चक्र मिला है। यह पुरस्कार युद्ध के मैदान में असाधारण साहस व सैन्य बलिदान के लिए दिया जाता है। राष्ट्रपति भवन में उन सभी की तस्वीरों को स्थान मिला है, जिसमें मेजर सोमनाथ शर्मा, लांस नायक करम सिंह, हवलदार अब्दुल हमीद समेत अन्य सभी हैं।

ललयाली की लड़ाई में दुश्मन पर काल बन टूट पड़े थे भारत माता के तीन सपूत

जांबाज विरेंद्र साही, मोहन लाल लखोत्रा और बाना सिंह ने वीरता न दिखाई होती तो जम्मू का बड़ा क्षेत्र पाकिस्तान के कब्जे में होता

जागरण विशेष
भारतीय थल सेना दिवस

विवेक सिंह • जागरण

जम्मू: 1971 के भारत-पाकिस्तान युद्ध के दौरान जम्मू-कश्मीर के अखनूर में ललयाली पोस्ट के लिए भीषण लड़ाई लड़ी गई। यहां आठ जम्मू-कश्मीर लाइट इन्फैंट्री (आठ-जैकलाई) के तीन जांबाज अपने साथियों संग दुश्मन पर काल बनकर टूट पड़े थे। ललयाली पोस्ट हाथ से निकल जाती तो आज जम्मू के छंब सेक्टर का 48 वर्ग किलोमीटर का इलाका पाकिस्तान के कब्जे में होता। भारतीय थल सेना दिवस पर इन सपूतों की वीर गाथा को याद करना देश की रक्षा में लगे जवानों के बलिदान और योगदान को सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

ललयाली की लड़ाई के नायक आठ जैकलाई के वीर चक्र विजेता कर्नल विरेंद्र साही घायल होने के बाद भी दुश्मन से लड़ते रहे। गोलियां से छलनी होने के बावजूद वह दुश्मन के सामने डटे रहे। उनके साथ लड़ रहे लांस नायक मोहन लाल लखोत्रा को भी गोलियां लगी थीं। वह जय दुर्गे, भारत माता की जय के उद्घोष के साथ अंतिम सांस तक दुश्मन से लड़ते रहे। इन वीरों के साथ परमवीर चक्र विजेता कैप्टन बाना सिंह ने ललयाली के पास ही देवा बटाला इलाके में पाकिस्तानी सैनिकों के साथ लोहा लेकर आठ जैकलाई की वीरता की परंपरा को कायम रखा।

ललयाली की लड़ाई में चार्ली कंपनी की कमान संभालने वाले मेजर विरेंद्र साही 1971 के भारत-पाकिस्तान युद्ध के दौरान पीस स्टेशन ग्वालियर मुख्यालय में तैनात थे। साही ने स्टेशन मुख्यालय को पत्र लिखा था कि उन्हें बंगाल में युद्ध क्षेत्र में भेजा जाए। जब इसे स्वीकार नहीं किया गया तो उन्होंने तत्कालीन आर्मी चीफ मानेकशा को पत्र लिखकर युद्ध में भेजने का आग्रह किया। इस पर आर्मी चीफ ने निर्देश दिए थे कि अगर युवा अधिकारी युद्ध क्षेत्र में जाना चाहता है तो उसे क्यों रोका जा रहा है। इसके बाद साही को छंब सेक्टर में लड़ाई को भेजा गया।

नाकाम की पाकिस्तान की साजिशः पाकिस्तान ने बंगाल में भारतीय सेना की कार्रवाई का बदला लेने के लिए जम्मू के छंब सेक्टर को कब्जे में लेने के लिए जम्मू-कश्मीर में तीन दिसंबर, 1971 को आपरेशन गजब छेड़ा था। पाकिस्तान अखनूर के पुल को कब्जा कर पूरे क्षेत्र को काटना चाहता था। अखनूर के पुल पर कब्जा होने से पाकिस्तान राजौरी, पुंछ जिलों पर काबिज हो जाता। छंब सेक्टर की ललयाली पोस्ट उसकी राह का रोड़ा थी। अन्य इलाकों में पाकिस्तानी सेना घुस आई थी। सिर्फ ललयाली पोस्ट ही ऐसी थी, जिसपर दुश्मन को रोककर उसके मंसूबों को नाकाम बना दिया गया।

हमारे 17 सैनिक बलिदान हुए, दुश्मन के 87 मार गिराए : साही

सेनानिवृत्त कर्नल विरेंद्र साही ने बताया कि ललयाली पोस्ट सेना के लिए बहुत मायने रखती थी। मेरी कंपनी में 117 लोग थे, इनमें एक लांस नायक मोहन लाल लखोत्रा भी थे। वीर चक्र विजेता लांस नायक मोहन लाल लखोत्रा बलिदान हुए। इस लड़ाई में हमारे 17 सैनिक बलिदान हुए, जबकि हमने दुश्मन के 87 सैनिकों के शव लौटाए थे। मेरे शरीर पर 200 टांके लगे थे।

परमवीर चक्र विजेता कैप्टन बाना सिंह बोले- हमने दुश्मन को बुरी तरह परास्त कर खदेड़ा

आठ जम्मू-कश्मीर लाइट इन्फैंट्री के परमवीर चक्र विजेता कैप्टन बाना सिंह बताते हैं कि वह 1971 के युद्ध में छंब सेक्टर के देवा बटाला में तैनात थे। सेना में शामिल हुए सिर्फ तीन साल हुए थे। हमने दुश्मन को बुरी तरह परास्त कर उसे खदेड़ दिया। बाद में हमने लद्दाख में सियाचिन ग्लेशियर की कायद चौकी को वापस लिया था। इसके लिए मुझे परमवीर चक्र मिला। वर्ष 1971 का युद्ध सबसे खराब परिस्थितियों में भी भारतीय सैनिकों के उच्च मनोबल, अटूट संकल्प, जीतने के अडिग विश्वास व देश के प्रति पूर्ण समर्पण का प्रतीक था।

वीर चक्र विजेता लांस नायक मोहन लाल लखोत्रा

अतिरिक्त सामग्री पढ़ने के लिए स्कैन करें।

Dainik Jagaran Page
Jansatta Page

INTERNATIONAL

ग्रीनलैंड ने कहा– हम डेनमार्क के साथ, ट्रंप बोले– इसकी खैर नहीं

अमेरिकी राष्ट्रपति ने कहा, ग्रीनलैंड पर अमेरिका के नियंत्रण से कम कुछ भी स्वीकार नहीं है | नियंत्रण के लिए नाटो अग्रणी भूमिका निभाए, अन्यथा रूस या चीन इसको हासिल कर लेंगे | व्हाइट हाउस में वेंस की डेनमार्क–ग्रीनलैंड के विदेश मंत्रियों से मुलाकात से पहले यह बयान

जागरण न्यूज नेटवर्क, नई दिल्ली

डेनमार्क के नियंत्रण वाले ग्रीनलैंड को लेकर तनातनी बढ़ती जा रही है। ग्रीनलैंड का कहना है कि वह अमेरिका के साथ नहीं बल्कि डेनमार्क के साथ है। जबकि अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने यह संकेत दिया है कि ग्रीनलैंड की अब खैर नहीं है। उन्होंने साफ शब्दों में कहा है कि ग्रीनलैंड पर अमेरिका के नियंत्रण से कम कुछ भी स्वीकार नहीं है। अमेरिकी राष्ट्रपति इस द्वीप पर नियंत्रण को लेकर लगातार दबाव बढ़ाते जा रहे हैं। यह बयानबाजी ऐसे समय तेज हुई है, जब अमेरिकी उपराष्ट्रपति जेडी वेंस से व्हाइट हाउस में डेनमार्क और ग्रीनलैंड के विदेश मंत्री मुलाकात करने वाले हैं।

ट्रंप ने बुधवार को अपने इंटरनेट मीडिया प्लेटफार्म ट्रुथ सोशल पर एक पोस्ट में अपनी दलील दोहराई कि

अमेरिका की राष्ट्रीय सुरक्षा के लिहाज से ग्रीनलैंड आवश्यक है। उन्होंने कहा, 'इस पर नियंत्रण के लिए नाटो (उत्तरी अटलांटिक संधि संगठन) को अग्रणी भूमिका निभानी चाहिए, अन्यथा रूस या चीन इसे हासिल कर लेंगे।' ट्रंप ने कहा, 'अमेरिका के हाथों में ग्रीनलैंड आने से नाटो और अधिक शक्तिशाली और प्रभावी बन जाएगा। इससे कम कुछ भी स्वीकार नहीं है।' ट्रंप ने कहा कि रूस और चीन के कब्जे से रणनीतिक रूप से महत्वपूर्ण इस द्वीप का सुरक्षित करने के लिए सभी विकल्प मौजूद हैं। उन्होंने प्रस्तावित रक्षा प्रणाली का जिक्र करते हुए कहा, 'हमारे गोल्डन डोम के लिए भी यह बहुत जरूरी है।' ट्रंप का यह बयान व्हाइट हाउस में वेंस के साथ डेनमार्क और ग्रीनलैंड के विदेश मंत्रियों की बैठक से कुछ घंटे पहले आया।

एपी के अनुसार, मंगलवार को कोपेनहेगन में ग्रीनलैंड के प्रधानमंत्री जेंस फ्रेडरिक नील्सन ने कहा, 'अगर हमें अमेरिका और डेनमार्क के बीच चयन करना पड़े तो हम डेनमार्क को चुनते हैं। हम नाटो को चुनते हैं। हम यूरोपीय संघ को चुनते हैं।' इस बयान के बारे में पूछे जाने पर ट्रंप ने कहा, 'मैं उनसे असहमत हूं। मैं नहीं जानता कि वह कौन हैं। मैं उनके बारे में कुछ नहीं जानता, लेकिन उनके लिए यह बड़ी समस्या बनने वाली है।'

डेनमार्क का यह है रुख

नाटो के सहयोगी डेनमार्क की पीएम मेट्टे फ्रेडरिकसन ने यूरोपीय सहयोगियों के साथ एक बयान में कहा था कि अगर अमेरिका ने ग्रीनलैंड पर कब्जा किया तो इसका सीधा अर्थ नाटो सैन्य गठबंधन का अंत होगा। खनिज संपदा से संपन्न यह द्वीप यहां के लोगों का है। डेनमार्क व ग्रीनलैंड के मामलों में निर्णय लेने का अधिकार केवल यहां के लोगों के पास है।

मैक्रों ने कहा, अभूतपूर्व होंगे प्रभाव

रायटर के अनुसार, फ्रांस के राष्ट्रपति इमैनुएल मैक्रों ने बुधवार को कैबिनेट बैठक में कहा कि अगर किसी यूरोपीय देश और उसके सहयोगी देश की संप्रभुता पर असर पड़ता है तो प्रभाव अभूतपूर्व होंगे। उन्होंने आर्कटिक क्षेत्र के द्वीप ग्रीनलैंड पर ट्रंप के नियंत्रण की कोशिश के संदर्भ में यह बात कही। मैक्रों ने कहा, 'हम ग्रीनलैंड पर बयानों को कम नहीं आंकते हैं।'

सैन्य कार्रवाई की धमकी के बावजूद ट्रंप के लिए आसान नहीं है ईरान पर हमला

ईरान में चले रहे विरोध प्रदर्शन के बीच अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप कई बार ईरान में सैन्य कार्रवाई की धमकी दे चुके हैं। ताजा धमकी में उन्होंने कहा है कि अगर ईरान विरोध प्रदर्शन के आरोप में गिरफ्तार किए गए किसी व्यक्ति को फांसी देता है तो उसके खिलाफ कड़ी कार्रवाई की जाएगी। हालांकि ट्रंप के लिए ईरान पर हमला करना आसान नहीं होगा। आइये जानते हैं ऐसे कौन से फैक्टर हैं जो ट्रंप को ईरान पर हमले से रोक रहे हैं।

अमेरिका ने नहीं भेजा है एयरक्राफ्ट कैरियर

राष्ट्रपति ट्रंप की आक्रामक बयानबाजी के बावजूद पेंटागन ने इस क्षेत्र की ओर कोई भी एयरक्राफ्ट कैरियर नहीं भेजा है। अमेरिका के सहयोगी खाड़ी देश पिछले वर्ष इजराइल के साथ 12 दिन की लड़ाई के दौरान हुए ईरानी हवाई हमलों से अभी भी उबर नहीं पाए हैं, उन्होंने भी ईरान पर अमेरिकी हमले में सहयोग देने में कोई दिलचस्पी नहीं दिखाई है। विशेषज्ञों का यह भी मानना है कि कोई भी अमेरिकी सैन्य हमला सुप्रीम लीडर अयातुल्ला अली खामेनेई और ईरानी सरकार को घरेलू समर्थन जुटाने, आंतरिक विरोध प्रदर्शनों को गैर–कानूनी ठहराने और बाहरी खतरे के खिलाफ क्षेत्रीय गठबंधनों को मजबूत करने में मदद करेगा।

लेनी होगी खाड़ी देशों की मदद

अक्टूबर से अमेरिका ने मिडिल ईस्ट में कोई एयरक्राफ्ट कैरियर तैनात नहीं किया है, क्योंकि गर्मियों में यूएसएस गेराल्ड आर फोर्ड को कैरिबियन भेज दिया गया था और पतझड़ में यूएसएस निमित्ज को अमेरिका के वेस्ट कोस्ट के एक पोर्ट पर भेज दिया गया था। इसका मतलब है कि ईरानी ठिकानों पर और अयातुल्ला अली खामेनेई पर कोई भी हवाई या मिसाइल हमला मध्य पूर्व में अमेरिका और उसके सहयोगी देशों के एयरबेस से ही करना होगा या उसमें उनका शामिल होना जरूरी होगा। ऐसे में अमेरिका को कतर, बहरीन, इराक, यूएई, ओमान और सऊदी अरब जैसे देशों में बेस इस्तेमाल करने की इजाजत लेनी होगी और उसे इन देशों को जवाबी कार्रवाई से बचाना होगा।

बी–2 विमानों से हमला हो सकता है खतरनाक

दूसरा विकल्प जून में फोर्डो की अंडरग्राउंड ईरानी न्यूक्लियर साइट पर बी–2 विमानों के मिशन जैसा हमला हो सकता है। लेकिन किसी शहरी, ज्यादा आबादी वाली जगह पर ऐसा हमला खतरनाक साबित हो सकता है क्योंकि इसमें बड़े पैमाने पर नागरिकों की मौत हो सकती है। भले ही अमेरिका मध्य पूर्व के एयरबेस पर तैनात प्लेटफार्म का इस्तेमाल न करे, लेकिन ईरानी नेताओं ने धमकी दी है कि अगर उनके देश पर हमला हुआ तो वे उसके बेस और जहाजों पर हमला करेंगे।

पहले ही वर्ष में ट्रंप ने किए 500 से ज्यादा हवाई हमले

खुद को शांति का दूत बताकर बार–बार नोबेल पुरस्कार की मांग करने वाले अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने अपने दूसरे कार्यकाल के पहले ही वर्ष में दूसरे देशों पर 573 हवाई और ड्रोन हमले किए। यह संख्या पूर्व राष्ट्रपति जो बाइडन के चार वर्षीय कार्यकाल के दौरान किए गए हमलों से भी अधिक है। संघर्षों पर नजर रखने वाली गैर–लाभकारी संस्था आर्म्ड कान्फ्लिक्ट लोकेशन एंड इवेंट डाटा प्रोजेक्ट (एसीएलईडी) की एक रिपोर्ट में यह जानकारी दी गई है।

पहले हमला करो, बाद में सवाल पूछो की रणनीति पर चले रहे हैं ट्रंप

अध्ययनकर्ताओं ने कहा कि ट्रंप के दूसरे कार्यकाल की रणनीति में 'पहले हमला करो, बाद में सवाल पूछो' की झलक दिखती है। वेनेजुएला और नाइजीरिया जैसे देशों में हाल के अभियान ट्रंप के इसी दृष्टिकोण के उदाहरण हैं। आंकड़े बताते हैं कि ट्रंप प्रशासन ने दूसरे कार्यकाल में पहली प्रतिक्रिया के रूप में तीव्र और व्यापक सैन्य कार्रवाई पर जोर दिया है।

सबसे ज्यादा निशाना बने हाउती विद्रोही

ट्रंप के कार्यकाल में हुई मौतों में कैरेबियन सागर और पूर्वी प्रशांत महासागर के अंतरराष्ट्रीय जलक्षेत्र में अमेरिकी सेना द्वारा मारे गए कम से कम 110 कथित मादक पदार्थों के तस्कर शामिल थे। जून में ईरान के परमाणु स्थलों पर अमेरिकी हमलों में हुई मौतों की संख्या अज्ञात है। जनवरी से दिसंबर के बीच हुए हमलों में से 80 प्रतिशत से अधिक यमन के हाउती विद्रोहियों को निशाना बनाकर किए गए, जिनमें 530 से अधिक लोगों की मौत हुई।

अमेरिकी सैन्य अभियानों में हुई हजार से ज्यादा मौतें

573 हवाई और ड्रोन हमले किए अमेरिका ने 20 जनवरी, 2025 से पांच जनवरी, 2026 के बीच

658 हो जाती है यह संख्या यदि गठबंधन सहयोगियों के साथ किए गए हमलों को शामिल किया जाए

494 हवाई व ड्रोन हमले हुए और 694 गठबंधन अभियान हुए थे बाइडन के चार वर्षीय कार्यकाल के दौरान

1,008 विदेशी सैन्य अभियानों में शामिल रहा कम से कम नौ देशों में अमेरिका पिछले 12 महीनों में

1,093 मौतें हुईं इन अभियानों के के परिणामस्वरूप अनुमानित

1,648 अभियानों में 1,518 मौतें हुई थी बाइडन के पूरे कार्यकाल के दौरान

स्रोत : आइएएनएस

ईरान के पास 2,000 बैलिस्टिक मिसाइलें

इजरायल के साथ 12 दिन की लड़ाई में ईरान की सैन्य क्षमताएं बहुत कमजोर हो गई थीं, लेकिन तेहरान ने सीमित मिसाइल क्षमता बरकरार रखी है। ईरान के मुख्य लांच साइट पहाड़ों में छिपे हुए हैं, जिन्हें वह फिर से बना रहा है। द गार्जियन की एक रिपोर्ट के अनुसार, ईरान के पास लगभग 2,000 बैलिस्टिक मिसाइलें हैं, जो अगर बड़ी संख्या में लांच की जाएं, तो अमेरिका और इज़राइल के एयर डिफेंस को भेदते हुए बड़े पैमाने पर तबाही मचा सकती हैं।

स्रोत : जागरण रिसर्च

भारत–ओमान समुद्री रिश्तों को मिलेगी नई मजबूती, मस्कट पहुंचा 'कौंडिन्य'

मस्कट, प्रेट्र: भारत और ओमान के बीच समुद्री रिश्तों को नई दिशा देने वाला पल सामने आया है। इसके तहत भारतीय नौसेना के स्वदेशी स्वदेशी रूप से निर्मित पारंपरिक शैली के पोत आइएनएसवी कौंडिन्य ने गुजरात के पोरबंदर से ओमान के मस्कट तक 18 दिनों की साहसिक और ऐतिहासिक यात्रा सफलतापूर्वक पूरी की। इस अवसर पर केंद्रीय बंदरगाह, जहाजरानी और जलमार्ग मंत्री सर्बानंद सोनोवाल ने कहा कि यह जहाज प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के विजन का प्रतीक है। यह पोत 29 दिसंबर, 2025 को गुजरात के पोरबंदर से रवाना हुआ था। कमांडर विकास शेओरान इस अभियान के कप्तान थे, जबकि कमांडर वाई हेमंत कुमार अभियान के प्रभारी अधिकारी के रूप में कार्यरत थे। हेमंत कुमार परियोजना की अवधारणा से ही इससे जुड़े हुए हैं। दल में चार अधिकारी और 13 नौसैनिक शामिल थे। मस्कट के सुल्तान काबूस बंदरगाह पहुंचने पर कौंडिन्य को वाटर सैल्यूट (जल सलामी) दिया गया।

- आइएनएसवी कौंडिन्य का मस्कट में हुआ जोरदार स्वागत
- केंद्रीय मंत्री ने इसे पीएम मोदी के विजन का प्रतीक बताया

मस्कट के सुल्तान काबूस बंदरगाह पहुंचने पर बुधवार को आइएनएसवी कौंडिन्य को वाटर सैल्यूट देता ओमान का जहाज। एएनआइ

पुराने रास्ते फिर से बहाल होगा

यह पोत भारत के पुराने समुद्री रास्तों को फिर से बहाल करेगा। यह जहाज हिंद महासागर की दुनिया से भारत के हजारों साल पुराने रिश्तों को दिखाएगा। पोत पर सवार आर्थिक सलाहकार परिषद के सदस्य संजीव सान्याल ने बताया कि परियोजना यह भी दर्शाती है कि प्राचीन भारत वास्तव में जोखिम उठाने वाले, साहसी और व्यापारियों पर आधारित था, जिन्होंने नए बाजारों और नई भूमि की खोज की।

आइएनएसवी कौंडिन्य की खासियत

65 फुट लंबी इस नौका का निर्माण पारंपरिक सिलाई तकनीक से किया गया है, जिसमें प्राकृतिक सामग्रियों और सदियों पुरानी विधियों का उपयोग किया गया है। यह पोत पांचवीं शताब्दी की एक नौका का पुनर्निर्माण है और प्राचीन अजंता गुफाओं के एक चित्र से प्रेरित है। इस पोत का नाम पौराणिक नाविक कौंडिन्य के नाम पर रखा गया है, जिनके बारे में माना जाता है कि उन्होंने प्राचीन काल में भारत से दक्षिण पूर्व एशिया की यात्रा की थी।

समाचार विषय → भारत–ओमान समुद्री संबंध मजबूत

- **INSV कौंडिया (Koudiya)** → भारतीय नौसेना का **स्वदेशी पारंपरिक पोत**
- **गंतव्य** → **मस्कट, ओमान**
- **प्रस्थान स्थल** → **मांडवी, गुजरात**
- **यात्रा अवधि** → **18 दिन**
- **निर्माण शैली** → **पारंपरिक लकड़ी का जहाज (डॉव तकनीक)**
- **उद्देश्य** → प्राचीन समुद्री मार्गों का पुनर्जीवन
- **प्रतीकात्मक महत्व** → भारत–अरब व्यापारिक विरासत
- **समुद्री कूटनीति** → Cultural + Strategic Outreach
- **स्वागत** → ओमान की नौसेना द्वारा

- **ओमान की राजधानी** → मस्कट
- **ओमान की खाड़ी** → **Gulf of Oman**
- **भारत–ओमान संबंध** → Strategic Partnership
- **डॉव (Dhow)** → अरब पारंपरिक नौका
- **INSV** → Indian Naval Sailing Vessel
- **मांडवी** → गुजरात का ऐतिहासिक बंदरगाह
- **अरब सागर** → हिंद महासागर का भाग
- **Hormuz Strait** → ओमान के निकट स्थित महत्वपूर्ण जलडमरूमध्य

EDITORIAL

विविधता का संगम

काशी-तमिल संगमम का चौथा संस्करण दो दिसंबर, 2025 को आरंभ हुआ। इस बार का विषय बहुत रोचक था- तमिल करकलम् यानी तमिल सीखें। इससे काशी और दूसरी जगहों के लोगों को तमिल भाषा सीखने का अनूठा अवसर मिला।

नरेंद्र मोदी

कुछ दिन पहले मुझे सोमनाथ की पवित्र भूमि पर सोमनाथ स्वाभिमान पर्व में हिस्सा लेने का सुअवसर मिला। इस पर्व को हम वर्ष 1026 में सोमनाथ पर हुए पहले आक्रमण के एक हजार साल पूरे होने पर मना रहे हैं। इस क्षण का साक्षी बनने के लिए देश के कोने-कोने से लोग सोमनाथ पहुंचे। यह इस बात का प्रमाण है कि भारतवर्ष के लोग जहां अपने इतिहास और संस्कृति से गहराई से जुड़े हैं, वहीं कभी हार न मानने वाला साहस भी उनके जीवन की बड़ी विशेषता है। यही भावना उन्हें एक साथ जोड़ती भी है। इस कार्यक्रम के दौरान मेरी मुलाकात कुछ ऐसे लोगों से भी हुई, जो इससे पहले सौराष्ट्र-तमिल संगमम के दौरान सोमनाथ आए थे और इससे पहले काशी-तमिल संगमम के समय काशी भी गए थे। ऐसे मंचों को लेकर उनकी सकारात्मक सोच ने मुझे बहुत प्रभावित किया। इसलिए मैंने तय किया कि इस विषय पर अपने कुछ विचार साझा करूं।

'मन की बात' की एक शृंखला के दौरान मैंने कहा था कि अपने जीवन में तमिल भाषा न सीख पाने का मुझे बहुत दुख है। यह हमारा सौभाग्य है कि बीते कुछ वर्षों से हमारी सरकार तमिल संस्कृति को देश में और लोकप्रिय बनाने में निरंतर जुटी हुई है। यह 'एक भारत, श्रेष्ठ भारत' की भावना को और सशक्त बनाने वाला है। हमारी संस्कृति में संगम का बहुत महत्त्व है। इस पहलू से भी काशी-तमिल संगमम एक अनूठा प्रयास है। इसमें जहां भारत की विविध परंपराओं के बीच अद्भुत सामंजस्य दिखता है, वहीं यह भी पता चलता है कि कैसे हम एक दूसरे की परंपराओं का सम्मान करते हैं।

काशी तमिल संगमम के आयोजन के लिए काशी सबसे उपयुक्त स्थान कहा जा सकता है। यह वही काशी है, जो अनादि काल से हमारी सभ्यता की धुरी बनी हुई है। यहां हजारों वर्षों से लोग ज्ञान, जीवन के अर्थ और मोक्ष की खोज में आते रहे हैं। काशी का तमिल समाज और संस्कृति से अत्यंत गहरा नाता रहा है। काशी बाबा विश्वनाथ की नगरी है, तो तमिलनाडु में रामेश्वरम तीर्थ है। तमिलनाडु की तेनकासी को दक्षिण की काशी या दक्षिण काशी कहा जाता है। कुमारगुरु स्वामीजी ने अपनी विद्वता और आध्यात्म परंपरा के माध्यम से काशी और तमिलनाडु के बीच एक सशक्त और स्थायी संबंध स्थापित किया था। तमिलनाडु के महान सपूत महाकवि सुब्रमण्यम भारती को भी काशी में बौद्धिक विकास और आध्यात्मिक जागरण का अद्भुत अवसर दिखा। यहीं उनका राष्ट्रवाद और प्रबल हुआ, साथ ही उनकी कविताओं को एक नई धार मिली। यहीं पर स्वतंत्र और अखंड भारत की उनकी संकल्पना को एक स्पष्ट दिशा मिली। ऐसे अनेक उदाहरण हैं, जो काशी और तमिलनाडु के बीच गहरे आत्मीय संबंध को दर्शाते हैं।

वर्ष 2022 में वाराणसी की धरती पर काशी-तमिल संगमम की शुरुआत हुई थी। मुझे इसके उद्घाटन समारोह में शामिल होने का सौभाग्य मिला था। तब तमिलनाडु से आए लेखकों, विद्यार्थियों, कलाकारों, विद्वानों, किसानों और अतिथियों ने काशी के साथ-साथ प्रयागराज और अयोध्या के दर्शन भी किए थे। इसके बाद के आयोजनों में इस पहल को और विस्तार दिया गया। इसका

उद्देश्य यह था कि संगमम में समय-समय पर नए विषय जोड़े जाएं, नए और रचनात्मक तरीके अपनाए जाएं और इसमें लोगों की भागीदारी ज्यादा से ज्यादा हो। प्रयास यह था कि यह आयोजन अपनी मूल भावना से जुड़े रह कर भी निरंतर आगे बढ़ता रहे। वर्ष 2023 के दूसरे आयोजन में प्रौद्योगिकी का बड़े पैमाने पर उपयोग किया गया, ताकि यह सुनिश्चित हो कि भाषा इसमें बाधा न बने। इसके तीसरे संस्करण में भारतीय ज्ञान प्रणाली पर विशेष जोर दिया गया। इसके साथ ही शैक्षिक संवादों, सांस्कृतिक प्रस्तुतियों, प्रदर्शनियों और संवाद सत्रों में लोगों की बड़ी भागीदारी देखने को मिली। हजारों लोग इनका हिस्सा बने।

> वर्ष 2022 में वाराणसी की धरती पर काशी-तमिल संगमम की शुरुआत हुई थी। तब तमिलनाडु से आए लेखकों, विद्यार्थियों, कलाकारों, विद्वानों, किसानों और अतिथियों ने काशी के साथ-साथ प्रयागराज और अयोध्या के दर्शन भी किए थे। इसके बाद के आयोजनों में इस पहल को और विस्तार दिया गया। इसका उद्देश्य यह था कि संगमम में समय-समय पर नए विषय जोड़े जाएं, नए और रचनात्मक तरीके अपनाए जाएं और इसमें लोगों की भागीदारी ज्यादा से ज्यादा हो। प्रयास यह था कि ये आयोजन अपनी मूल भावना से जुड़े रह कर भी निरंतर आगे बढ़ता रहे।

काशी-तमिल संगमम का चौथा संस्करण दो दिसंबर, 2025 को आरंभ हुआ। इस बार का विषय बहुत रोचक था- तमिल करकलम् यानी तमिल सीखें...। इससे काशी और दूसरी जगहों के लोगों को खूबसूरत तमिल भाषा सीखने का अनूठा अवसर मिला। तमिलनाडु से आए शिक्षकों ने काशी के विद्यार्थियों के लिए इसे अविस्मरणीय बना दिया। इस बार कई और विशेष कार्यक्रम भी आयोजित किए गए। प्राचीन तमिल साहित्य ग्रंथ तोलकाप्पियम का चार भारतीय और छह विदेशी भाषाओं में अनुवाद किया गया।

इसके अलावा काशी में स्वास्थ्य शिविरों और डिजिटल साक्षरता शिविर के आयोजन के साथ ही कई और सराहनीय प्रयास भी किए गए। इस अभियान में सांस्कृतिक एकता के संदेश का प्रसार करने वाले पांड्य वंश के महान राजा आदि वीर पांडियन जी को श्रद्धांजलि अर्पित की गई। पूरे आयोजन के दौरान नमो घाट पर प्रदर्शनियां लगाई गईं। बीएचयू में शैक्षणिक सत्र का आयोजन हुआ, साथ ही विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रम भी हुए। काशी-तमिल संगमम में इस बार जिस चीज ने मुझे सबसे अधिक प्रसन्नता दी, वह हमारे युवा साथियों का उत्साह है। इससे अपनी जड़ों से और अधिक जुड़े रहने के उनके उत्साह का पता चलता है। उनके लिए यह एक ऐसा अद्भुत मंच है, जहां वे विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रमों के जरिए अपनी प्रतिभा दिखा सकते हैं। संगमम के अलावा काशी की यात्रा भी यादगार बने, इसके लिए विशेष प्रयास किए गए। भारतीय रेल ने लोगों को तमिलनाडु से उत्तर प्रदेश ले जाने के लिए विशेष रेलगाड़ियां चलाईं। इस दौरान कई स्टेशनों पर, विशेषकर तमिलनाडु में उनका खूब उत्साह बढ़ाया गया।

यहां मैं काशी और उत्तर प्रदेश के अपने भाइयों और बहनों की सराहना करना चाहूंगा, जिन्होंने काशी-तमिल संगमम को विशेष बनाने में अपना अद्भुत योगदान दिया है। उन्होंने अपने अतिथियों के स्वागत और सत्कार में कोई कोर-कसर नहीं छोड़ी। कई लोगों ने तमिलनाडु से आए अतिथियों के लिए अपने घरों के दरवाजे तक खोल दिए। स्थानीय प्रशासन भी चौबीसों घंटे जुटा रहा, ताकि मेहमानों को किसी प्रकार की दिक्कत न हो। वाराणसी का सांसद होने के नाते मेरे लिए यह गर्व और संतोष दोनों का विषय है। इस बार काशी-तमिल संगमम का समापन समारोह रामेश्वरम में आयोजित किया गया, जिसमें तमिलनाडु के सपूत उपराष्ट्रपति सीपी राधाकृष्णन भी मौजूद रहे। उन्होंने इस कार्यक्रम को अपने विचारों से समृद्ध बनाया। भारतवर्ष की आध्यात्मिक समृद्धि पर बल देते हुए उन्होंने बताया कि कैसे इस तरह के मंच राष्ट्रीय एकता को सुदृढ़ करते हैं।

काशी-तमिल संगमम का बहुत गहरा प्रभाव देखने को मिला है। इसके जरिए जहां सांस्कृतिक चेतना को मजबूती मिली है, वहीं शैक्षिक विमर्श और जनसंवाद को भी काफी बढ़ावा मिला है। इससे हमारी संस्कृतियों के बीच संबंध और प्रगाढ़ हुए हैं। इस मंच ने 'एक भारत, श्रेष्ठ भारत' की भावना को आगे बढ़ाया है, इसलिए आने वाले समय में हम इस आयोजन को और जीवंत बनाने वाले हैं। ये वह भावना है, जो शताब्दियों से हमारे पर्व-त्योहार, साहित्य, संगीत, कला, खान-पान, वास्तुकला और ज्ञान-पद्धतियों का महत्त्वपूर्ण हिस्सा रही है।

वर्ष का यह समय हर देशवासी के लिए बहुत ही पावन माना जाता है। लोग बड़े उत्साह के साथ संक्रांति, उत्तरायण, पोंगल और माघ बिहू जैसे अनेक त्योहार मना रहे हैं। ये सभी उत्सव मुख्य रूप से सूर्यदेव, प्रकृति और कृषि को समर्पित हैं। ये त्योहार लोगों को आपस में जोड़ते हैं, जिससे समाज में सद्भाव और एकजुटता की भावना और प्रगाढ़ होती है। इस अवसर पर मैं आप सभी को अपनी शुभकामनाएं देता हूं। मुझे पूरा विश्वास है कि इन उत्सवों के साथ हमारी साझी विरासत और सामूहिक भागीदारी की भावना देशवासियों की एकता को और मजबूत करेगी।

(लेखक भारत के प्रधानमंत्री हैं)